ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

आषाढ़-सावन संवत् नानकशाही ५५४ जुलाई 2022 वर्ष १५ अंक ११

श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर साहिब

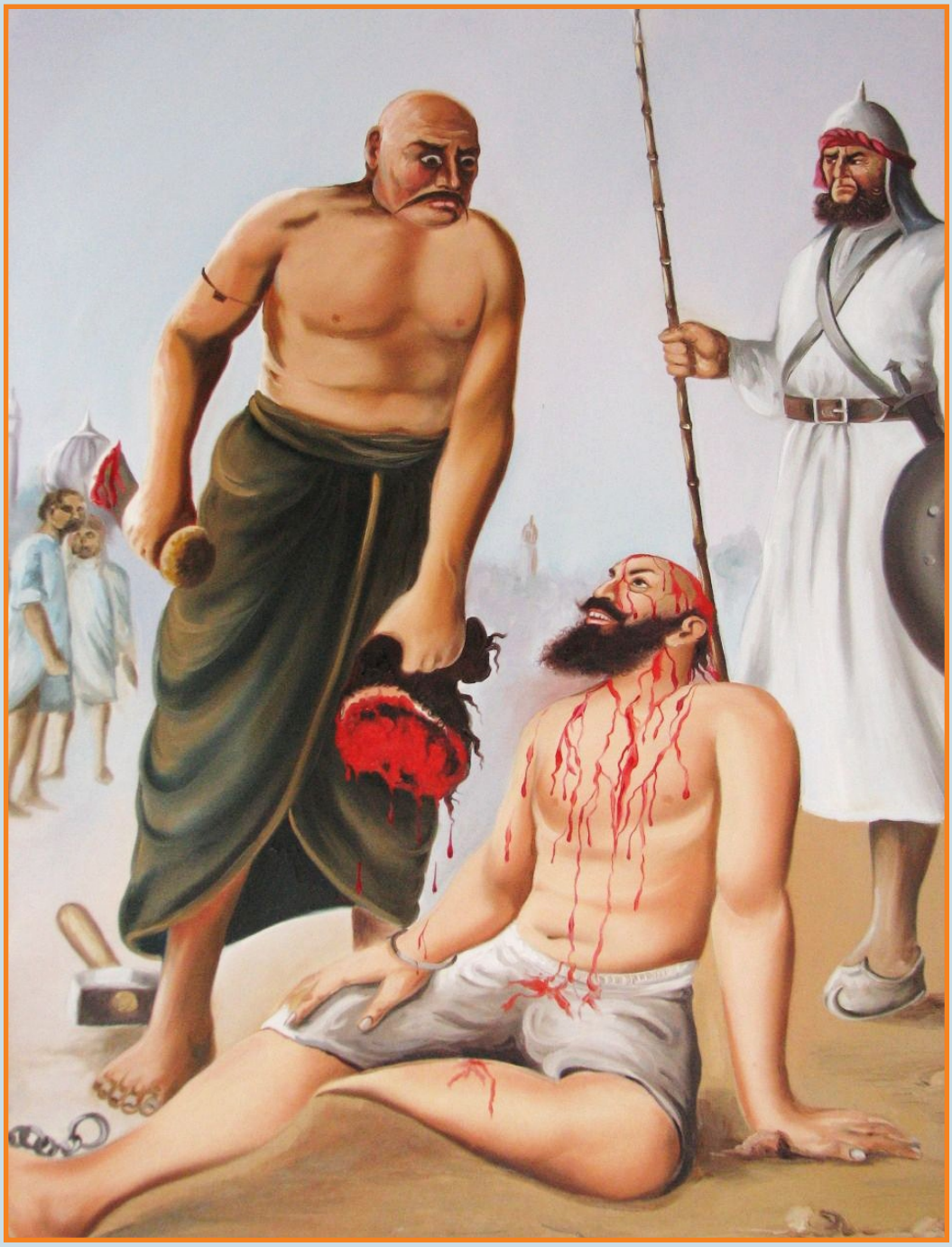

भाई तारू सिंघ जी को शहीद किये जाने का दृश्य

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

आषाढ़-सावन, संवत् नानकशाही 554
वर्ष 15 अंक 11 जुलाई 2022

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
उदारचरित एवं करुणाशील : श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी 7
-डॉ. मनजीत कौर
श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जीवन-प्रबंधन का संदेश 11
-डॉ. पिलकेन्द्र अरोरा
महान् विद्वान और अमर शहीद भाई मनी सिंघ जी 20
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
सिक्ख पंथ का गौरव : भाई तारू सिंघ जी 23
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
श्री अकाल तख़्त साहिब . . . 29
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
मीरी-पीरी : व्यवहारिक जीवन का आधार 32
-सतविंदर सिंघ फूलपुर
सिक्ख पहचान में निशान साहिब का महत्व 35
- डॉ. परमवीर सिंघ
शहीद सरदार ऊधम सिंघ 37
-एडवोकेट कुलबीर सिंघ
वातावरण की अशुद्धता : समस्या और समाधान 40
- डॉ. इंदरजीत सिंघ 'वासु'
सरदार जी (कविता) 45
-श्री संजय कुंदन
कैसे हम इंसान हैं ? (कविता) 46
-डॉ. मनजीत कौर
ख़बरनामा 47

गुरबाणी विचार

सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥
मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥
बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥
हरि अंम्रित बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥
वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु ॥
हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥
जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥
नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥
सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥६ ॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में सावन मास की सुहावनी ऋतु और इससे संबंधित प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दृश्य-चित्रण तथा बिंबावली के प्रसंग में आत्मा की प्रभु-मिलाप की इच्छा के साथ-साथ गुरमति मार्ग के अनुरूप इसके लिए दिशा-निर्देश बख्शिश करते हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि जैसे सावन मास में वनस्पति रस से भरपूर हो जाती है वैसे ही रूहानी मार्ग पर चलने वाली जीव-स्त्री के लिए प्रभु-भक्ति के मार्ग में भी ऐसा ही पड़ाव आता है जब उसका प्रभु के कमल रूपी सुंदर चरणों के साथ प्यार बन जाता है अथवा उसे प्रभु-चिंतन-मनन में रस आने लगता है। उसका मन सदैव मालिक के रंग में रंग जाता है और वह प्रभु-नाम को अपने जीवन का आधार बना लेती है। उसे सांसारिक विषय-विकारों के रंग में झूठ अथवा उनके अस्थायी होने का आभास हो जाता है और ये उसे राख-रूपी प्रतीत होते हैं। उसको प्रभु-नाम-रूपी अमृत बूंद के सुहावनी होने का अनुभव होता है और यह साधु-जनों की संगत में ही पी जा सकती है, का तथ्य ज्ञात हो जाता है।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिस प्रभु के संग से सारी वनस्पति ने प्रफुल्लित होना है, उस प्रभु का अंत मनुष्य-मात्र नहीं पा सकता। ऐसे सक्षम प्रभु से मिलने के लिए मेरा मन चाहता है, परंतु वह मात्र चाहने से नहीं बल्कि उसी की कृपा से मिलता है। जीव-आत्मा महसूस करती है कि उसने अभी मालिक को पाया नहीं, परंतु जिन भाग्यशाली जीव-स्त्रियों ने उस मालिक को प्राप्त कर लिया है उन पर मैं सदैव बलिहार जाती हूं। गुरु जी कथन करते हैं कि हे प्रभु! मुझ असहाय पर भी कृपा करो। गुरु-शबद द्वारा आप मेरी तकदीर संवारने वाले हो। सावन का महीना उन भाग्यशाली जीव-स्त्रियों के लिए ही शीतल व सुहावना है जिन्होंने अपने हृदय-रूपी गले में प्रभु-नाम-रूपी हार पहन लिया है।

संपादकीय

मीरी-पीरी का गुरमति सिद्धांत

मीरी-पीरी का गुरमति सिद्धांत श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की सिक्ख पंथ को समय के हालात का असरदार ढंग के साथ मुकाबला करने तथा हर मैदान फतह करने के लक्ष्य की पूर्ति हेतु महान और अद्वितीय देन है। मीरी-पीरी के गुरमति सिद्धांत या सिक्ख सिद्धांत के बीज सिक्ख पंथ के संस्थापक श्री गुरु नानक पातशाह के पवित्र उपदेशों और उनके द्वारा उच्चारण की गई धुर की बाणी में से झलकते महसूस किये जा सकते हैं। वैसे मीरी-पीरी का सिद्धांत स्पष्ट और भरपूर रूप से छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के गुरुआई-काल में प्रकट और लागू हुआ।

इस सिद्धांत को प्रकट और लागू करते वक्त तत्कालीन के अत्याचारी राजनीतिक निज़ाम के साथ टकराने का सामर्थ्य संचारित किया जा सका और सिक्ख पंथ के शाश्वत विकास-विगास को ठोस आधार प्रदान किया जा सका। जुल्म की धारा का रुख मोड़ते हुए सज़लूम का हाथ थामने और उसे न्याय दिलाने के संयोग बनाए गए। ज़ालिम निज़ाम के आक्रमणों का शूरवीरता के साथ मुकाबला करने के लिए सिक्ख पंथ की रक्षा-सुरक्षा करने वाली फ़ौज संगठित करने का प्रयास किया जा सका। यदि यह कह दिया जाये कि छठे पातशाह के समय और इसके बाद के काल में होने वाले सिक्ख पंथ के समूह संघर्षों का आधार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा प्रदत्त मीरी-पीरी का सिद्धांत ही है तो इसमें कोई अतिकथनी नहीं है।

मीरी-पीरी का सिक्ख सिद्धांत यह दर्शाता है कि श्री गुरु नानक पातशाह के सिक्ख धर्म में सांसारिक तथा रूहानी दोनों शक्तियों के संचार का विधान है और इन दोनों शक्तियों का संचार एक ही समय में न केवल संभव और संभावी है, बल्कि बेहद ज़रूरी भी है। गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख हर समय परमात्मा के नाम के रंग में और उसकी निर्मल भय-भावना में रहते हुए इस संसार में अपने सांसारिक कर्त्तव्यों को भी बाखूबी निभाने हेतु यत्नशील रहता है।

मीरी-पीरी का सिद्धांत मनुष्य को दिशा-निर्देश देता है कि संसार में आत्मसम्मान के साथ जीने के लिए शारीरिक शक्ति का संचार करने की भी ज़रूरत है। मनुष्य को समकालीन अत्याचारी शक्तियों का भय मानने की मुहताजी नहीं होनी चाहिए। वह को राजनीतिक परतंत्रता या ग़ुलामी की जंजीरों की कैद को सिर झुका कर स्वीकार करते हुए अपने दुर्लभ मनुष्य जीवन कभी बेकार नहीं गंवाता, बल्कि वह तो एकमात्र अकाल पुरख के भय में ही अपना जीवन सफल करता है। मीरी-पीरी का सिद्धांत सिक्ख पंथ को सिर उठा कर जीने के लिए न केवल आदेश ही देता है, बल्कि यह आत्मसम्मान को हर हाल में

कायम रखने के लिए सिक्ख पंथ के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है। सिक्ख ने किसी भी बड़ी से बड़ी सांसारिक शक्ति का भय नहीं मानना, कमज़ोरी या संकीर्ण सोच पैदा नहीं होने देनी। निडरता और आत्मसम्मान के साथ जीने के लिए शस्त्रधारी होने की भी ज़रूरत है। अत्याचारी से अपनी रक्षा करने तथा अन्य लोगों को बचाने के लिए शस्त्रबद्ध होने की ज़रूरत है। स्वाभिमानी जीवन जीना है। स्वाभिमान के बिना शरीर की साँसों का चलते रहना अर्थ भरपूर नहीं। इस संबंध में गुरबाणी का फ़रमान— *''जे जीवै पति लथी जाइ ॥ सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥''* भी हमें मीरी-पीरी के सिद्धांत को जीवन में व्यवहारिक रूप से अपनाने के लिए आदर्श नेतृत्व प्रदान करता है।

मीरी-पीरी का सिद्धांत हमें यह भी बताता है कि सांसारिक प्रभुता को हमने मुख्य मंज़िल के रूप में नहीं लेना। दूसरे शब्दों में कहें तो मानव जीवन में रूहानी मार्ग को कदाचित त्यागना नहीं। परमात्मा का सर्वव्यापक और घट-घट में निवास प्रत्येक सिक्ख ने देखना तथा अनुभव करना है और समूह मानवता के भले का सर्वोत्तम उद्देश्य कभी भुलाना नहीं है। सभी मानव एक परमात्मा की रचना हैं। भ्रातृ-भाव एवं सांझीवालता का मनोभाव गुरु के नाम-लेवा सिक्ख पंथ ने सदा ही सामने रखना है और दुई-द्वैत, बेगानापन, वैर, नफ़रत आदि मानवता-विरोधी निम्न स्तर के भाव को प्रबल नहीं होने देना। छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने इस सम्बन्ध में अपने नाम-लेवा सिक्खों के आदर्श नेतृत्व के लिए पैंदे खान को युद्ध के दौरान चित्त करने के बाद उसके साथ अंतिम समय में वचन भी किये और उसके सिर पर अपनी ढाल से छांव भी की। यह याद रहे कि पैंदे खान गुरु-घर में गुरु जी की सरप्रस्ती में रहा था, मगर शारीरिक बल एवं मानसिक अज्ञानता में फंस कर गुरु-घर के ही ख़िलाफ़ हो गया था और गुरु जी के विरोध में हमलावर बन कर आया था।

मीरी-पीरी का गुरमति सिद्धांत हमें सांसारिक और रूहानी दोनों शक्तियों को एक साथ संचारित व विकसित करने के लिए स्वस्थ नेतृत्व प्रदान करता है। यह गुरु नानक-नाम-लेवा सिक्ख का लोक-परलोक संवारने को यकीनी बनाता है।

गुरु-काल के बाद भी गुरु नानक-नाम-लेवा सिक्ख पंथ ने हर हाल में इस सिद्धांत को सामने रखा। चाहे इसे निभाने एवं व्यवहार में लाते समय उन्हें वक्त के राजसी प्रबंधों तथा सिक्ख-विरोधी शक्तियों की तरफ से कई प्रकार की अड़चनों, रुकावटों का सामना करना पड़ा। मीरी-पीरी के सिद्धांत को सिक्खों से छीनने या उन्हें दूर करने के लिए समय-समय की शातिर सरकारें कई तरह के हथकंडे अपनाती आई हैं। धर्म और राजनीति को अलग करने के शोशे छोड़े जाते हैं, लेकिन गुरु-सिद्धांत और गुरबाणी की ओट में चलते सिक्ख पंथ ने कभी भी मीरी-पीरी के गुरमति सिद्धांत को आँखों से ओझल नहीं किया। सिक्ख पंथ को अपने आप पर विश्वास है कि वह उचित मार्ग पर अग्रसर है। वह अपने गुरु के हुक्म में है। गुरु-हुक्म की तामील करना प्रत्येक सिक्ख का मूल कर्त्तव्य है।

उदारचरित एवं करुणाशील : श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी

*-डॉ. मनजीत कौर**

महाकवि भाई संतोख सिंघ ने बालाप्रीतम, नूरेआलम, उदारचरित, दुखियों के दर्दमंद श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी की उच्च आत्मिक अवस्था को बयान करते हुए बड़ा सार्थक लिखा है कि गुरु जी के दर्शन-मात्र से शारीरिक दुख दूर हो जाते हैं; उनके चरण-कमलों के ध्यान-मात्र से समस्त क्लेश, संताप और पीड़ा मिट जाती है :

दरसन ते संकट नसहि पग परसन सुख दाइ।
जन हरसन सरसन सदा श्री हरिक्रिशन सुभाइ॥

यहीं नहीं, गुरु कलगीधर पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की उच्च आध्यात्मिक अवस्था एवं महिमा 'श्री भगौती जी की वार' में इस प्रकार व्यक्त की है :

श्री हरिक्रिशन धिआईऐ
जिस डिठे सभि दुखि जाइ॥

इस पावन पंक्ति को हर नानक-नाम-लेवा सिक्ख अत्यन्त श्रद्धा-भाव से प्रतिदिन अरदास में स्मरण करता हुआ असीम सुख की अनुभूति करता है।

प्रकाश : बाला प्रीतम श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी का जन्म (प्रकाश) श्री गुरु हरिराय साहिब तथा माता क्रिशन कौर जी के घर ८ सावन, संवत १७१३ तद्नुसार ७ जुलाई, १६५६ ई. को कीरतपुर साहिब, जिला रोपड़ (पंजाब) में हुआ। आप जी के बड़े भाई का नाम रामराय था।

गुरुआई : मात्र सवा पांच वर्ष की अल्पायु में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी गुरुआई पर विराजमान हुए। गुरु-घर में आयु अथवा रिश्ते का तकाजा नहीं, अपितु ज्योति एवं युक्ति की समानता होना अनिवार्य है। इस संदर्भ में शेख शायदी ने बाखूब लिखा है :

बुजुर्गी ब-अक्ल न बसाल।
अमीरी ब-दिल न बमाल।

अर्थात् प्रशंसा निर्मल बुद्धि तथा गुणों पर ही निर्भर होती है, न कि बड़ी उम्र पर। इसी प्रकार अमीरी का सम्बंध दिल से है, दौलत से नहीं।

इस संदर्भ में अगर विचार करें तो स्पष्ट हो जाता है कि बालाप्रीतम श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी ने बाल्यावस्था में गुरुआई पर विराजमान होकर गुरु-घर की मर्यादा को पूर्णतया निभाया। गुरु-पिता श्री गुरु हरिराय साहिब जी की महान शख्सियत का आप पर अत्यधिक प्रभाव था। आपने अल्पावस्था में ही अनेक व्यवहारिक एवं परमार्थक कार्यों को सम्पूर्ण किया। सिक्खी प्रचार हेतु हर तरफ प्रचारक भेजे। इतनी छोटी अवस्था में आपकी

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

बुद्धि बुजुर्गों वाली थी। आप अमृत वेले उठकर ईश्वर-सिमरन में लीन हो जाते, गुरबाणी पाठ-कीर्तन श्रवण करते, गुरबाणी-विचार करते, संगत की आशंकाओं का निवारण करते। गुरु जी के दर्शन करने एवं गुरमति विचार श्रवण करने से लोगों के मानसिक एवं शारीरिक दुख-संताप दूर हो जाते। आपने भिक्षावृत्ति से अपने उदर की पूर्ति करने वालों को धर्म की पवित्र किरत (मेहनत) करने का उपदेश दिया, जिनमें भाई फकीरिया, भाई भोला, भाई भीमा आदि को विशेष रूप से गुरबाणी के माध्यम से प्रेरित किया।

रामराय का विरोध तथा औरंगजेब से शिकायत : बेशक आपका बड़ा भाई नीति-निपुण था और अपनी चतुराइयों से उसने सिक्ख संगत में अपनी जगह भी बना ली थी, लेकिन गुरु-घर में सियानपों, चतुराइयों को मान-सम्मान नहीं मिलता। समय के बादशाह औरंगजेब ने जब श्री गुरु हरिराय साहिब जी को दिल्ली आने का निमन्त्रण भेजा तो गुरु साहिब ने स्वयं न जाकर अपने बड़े पुत्र रामराय को दिल्ली भेज दिया और साथ ही हिदायत की कि वहां जाकर गुरु-घर की मर्यादा के खिलाफ कोई कार्य न करना और न ही किसी प्रकार की खुशामद करना। रामराय ने वहां जाकर गुरु-पिता के आदेश के खिलाफ शाही प्रभाव में आकर करामातें दिखानी शुरू कर दीं। इतिहासकारों ने रामराय द्वारा ७२ करामातें दिखाने का जिक्र किया है। रामराय की इन करामातों से दिल्ली का बादशाह तो बहुत प्रभावित हुआ लेकिन रामराय द्वारा ऐसा करना गुरु-पिता के हुक्म की उल्लंघना थी। इनके बदले में दयालु पिता श्री गुरु हरिराय साहिब जी शायद उसे क्षमा कर भी देते, लेकिन पावन बाणी से खिलवाड़ हरगिज बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। हुआ यूं कि जब औरंगजेब तथा उसके समर्थक मौलाना ने रामराय से प्रश्न किया कि हमने सुना है कि आपके धार्मिक ग्रंथ में मुसलमानों के खिलाफ लिखा है :

मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर॥
घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार॥

(पन्ना ४६६)

इसका अर्थ क्या है? इसमें मुसलमान की निंदा क्यों की गई है? इसके जवाब में रामराय अपने रसूख को बरकरार रखने हेतु अक्षम्य अपराध कर बैठा और कहा कि ऐसा नहीं है। वहां तो ''मिटी बेईमान की . . .'' लिखा है। यह सुनकर औरंगजेब बहुत प्रसन्न हुआ और इसी खुशी में उसने रामराय को दून (देहरादून) के इलाके की जागीर दे दी। इसके विपरीत सच्चे पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने जब संगत से रामराय की इस गुस्ताखी के बारे में सुना तो उन्होंने हुक्म कर दिया कि रामराय आजीवन हमारे समक्ष न आए। यह आदेश श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित मानवतावादी धर्म के सिद्धांतों को उनके मौलिक रूप में बचाने की खातिर था और आने वाले भौतिक चकाचौंक वाले युग के लिए भी यह अत्यन्त आवश्यक था कि इलाही बाणी से खिलवाड़ किसी भी कीमत पर सहन नहीं होगा।

अब एक तरफ श्री गुरु हरिराय साहिब का अपने बड़े पुत्र से सम्बंध-विच्छेद का प्रभाव था और दूसरी तरफ श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की गुरुआई पर विराजमान होते ही दिनो-दिन बढ़ती शोभा रामराय के लिए नागवार हो गुजरी। उसने औरंगजेब से शिकायत की कि ''जिस गद्दी पर ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते मेरा अधिकार है, वह मुझे वापिस दिलवाई जाए। मेरा छोटा भाई इसके योग्य नहीं है। आप उसे दिल्ली बुलाएं और स्वयं उसकी परख करें।''

औरंगजेब द्वारा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को दिल्ली-आगमन हेतु निमंत्रण-पत्र : रामराय की शिकायत पर विचार करने के पश्चात् औरंगजेब ने जयपुर के राजा जय सिंह के हाथ श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी को दिल्ली-आगमन हेतु निमन्त्रण-पत्र भेजा। साथ ही दिल्ली की संगत ने भी गुरु जी के दर्शन की इच्छा जाहिर की। संगत की अभिलाषा थी कि यहां आकर गुरु जी रामराय की कुटिल चालों से भी संगत को सुचेत करें।

औरंगजेब का निमन्त्रण-पत्र पाकर गुरु जी ने जहां पिता-गुरु जी की आज्ञा को शिरोधार्य मानते हुए औरंगजेब से न मिलने का प्रण दोहराया, वहीं दूसरा पत्र संगत का पाकर स्वयं को दिल्ली जाने से न रोक सके और अगले ही दिन संगत तथा परिवार के साथ दिल्ली को प्रस्थान किया।

दिल्ली-प्रस्थान के दौरान मार्ग की घटना : गुरु साहिब जब दिल्ली के लिए रवाना हुए तो मार्ग में बहुत-सी सिक्ख संगत गुरु जी के साथ जुड़ती गई। जब गुरु जी अंबाला के पंजोखरा गांव पहुंचे तो वहां का पण्डित लाल चंद, जो कि अपनी विद्वता पर बड़ा घमंड करता था, गुरु जी के पास आया और बड़े घमंडी लहजे में बोला कि ''स्वयं को 'हरिक्रिशन' कहलवाते हो! श्रीकृष्ण जी ने 'गीता' की रचना की है, आप 'गीता' के अर्थ करके बताओ!'' गुरु साहिब ने बड़ी सहजता से उत्तर दिया— ''हम अर्थ करें तो कौन-सी बड़ी बात होगी! आप जाओ और जिसे चाहो गांव से बुला लाओ, हम उसी से इसके अर्थ करवा देते हैं।'' पंडित लाल चंद मन में यह विचारते हुए फटाफट गया कि आज गुरु जी को शास्त्रार्थ में हरा दूंगा। उसने गूंगे-बहरे, नितांत अनपढ़ छज्जू झीवर नामक व्यक्ति को गुरु जी के समक्ष ला खड़ा किया। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी की कृपा-दृष्टि पाकर, पंडित लाल चंद द्वारा पूछे गए कठिन पदों का छज्जू झीवर ने बड़ी सहजता से अत्यधिक सुंदर भावार्थ किया। उसके मुख से सुंदर अर्थ सुनकर पण्डित लाल चंद बड़ा लज्जित हुआ और उसका अभिमान चूर-चूर हो गया। वह गुरु-चरणों में नत्मस्तक हुआ और साथ ही गुरु-कृपा का पात्र बन गुरु-घर का श्रद्धालु प्रचारक बना।

राजा जय सिंह के बंगले में गुरु जी के आत्मिक ज्ञान की परख : मार्ग में संगत को ईश्वरीय प्रेम का पावन संदेश देते हुए गुरु साहिब दिल्ली में राजा जय सिंह के बंगले में पहुंचे।

राजा जय सिंह ने गुरु जी के आत्मिक ज्ञान की परख करनी चाही। औरंगजेब के कहने पर राजा

जय सिंह गुरु जी को अपने महल में ले गया, जहां उसकी रानी व दासियों ने एक जैसे वस्त्र पहने हुए थे। गुरु जी ने अपनी अन्त:दृष्टि से दासी रूप में बैठी रानी को पहचान लिया। अब राजा जय सिंह को पूरी तसल्ली हो गई। जब यह खबर औरंगजेब तक पहुंची तब औरंगजेब की गुरु साहिब से मिलने की इच्छा और तीव्र हो गई, लेकिन श्री गुरु हरिराय साहिब जी के आदेशानुसार श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने औरंगजेब से मिलने का प्रस्ताव पुन: दृढ़तापूर्वक ठुकरा दिया।

अगले दिन औरंगजेब ने अपने पुत्र को दर्शनार्थ भेजा। गुरु साहिब ने उसे आत्मिक उपदेश दिया। अपने प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पाकर औरंगजेब के बेटे को अत्यन्त शांति मिली। तसल्लीबख्श उत्तर पाकर जब उसने अपने पिता औरंगजेब से बात की तो औरंगजेब को भी यकीन हो गया कि वास्तव में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ही गुरुआई के असली हकदार हैं।

दिल्ली में गुरु जी का संगत द्वारा अत्यंत श्रद्धा-भावना से आदर-सत्कार किया जाने लगा। दिल्ली की संगत वहां जुड़ती गई और सत्संग के प्रवाह चलने लगे।

हुकमनामे जारी करना : गुरु साहिब ने अपने विवेक से अनेक निर्णय लिए , हुकमनामे जारी किये, तम्बाकू-निषेध उपक्रम चलाया। कन्या-वध करने वाले तथा तंबाकू का उपयोग करने वाले (कुड़ीमार और नड़ीमार) के साथ रोटी-बेटी का सम्बंध न रखने का आदेश दिया।

दिल्ली में फैली महामारी से मुक्ति दिलाना : इस दौरान दिल्ली में चेचक की महामारी फैलने पर गुरु जी रोगियों की दिन-रात सेवा करते रहे। रोग के भयावह रूप व पानी की किल्लत को देखते हुए गुरु जी ने रोगियों की औषधि एवं पानी से भरपूर सेवा की। रोगियों की सेवा करते हुए वे स्वयं भी चेचक रोग से ग्रसित हो गए।

योग्य उत्तराधिकारी का चुनाव : श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने लगभग ढाई वर्ष तक अल्पावस्था में गुरुआई की महान जिम्मेदारी को अत्यंत सूझबूझ एवं दृढ़तापूर्वक निभाया। औरंगजेब जैसे क्रूर बादशाह की तनिक भी परवाह न करते हुए गुरुआई हेतु अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक योग्य उत्तराधिकारी का चयन किया। परम ज्योति में विलीन होने से पूर्व संगत को प्रभु-सिमरन में जोड़ते हुए एलान किया — ''बाबा बकाले!'' यह वचन करते हुए गुरु साहिब ३ वैसाख, संवत् १७२१ तद्नुसार ३० मार्च, १६६४ ई. को परम ज्योति में विलीन हो गए। यमुना नदी के किनारे आपके पावन शरीर का दाह-संस्कार किया गया। यहां पर गुरुद्वारा बाला साहिब सुशोभित है।

आठ वर्ष की अल्पायु में गुरु साहिब में दूरदर्शिता, ज्ञान, विनम्रता, विवेकशीलता, सेवा एवं परोपकार वाली भावना के दर्शन होते हैं। उनके प्रकाश पर्व को आज भी सिक्ख जगत में अत्यन्त श्रद्धा-भावना, उल्लास एवं उत्साहपूर्वक 'सेवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। गुरु जी की महान एवं उच्च करनी समूची मानवता के लिए विलक्षण मिसाल है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जीवन-प्रबंधन का संदेश

*-डॉ. पिलकेन्द्र अरोरा**

जीवन को सफल और सार्थक बनाने के लिए उसका प्रबंधन जरूरी है और उसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य के व्यक्तित्व में विनम्रता, क्षमा, निर्भयता, निर्वैरता, धैर्य, संयम आदि गुण हों। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी जीवन जीने की कला का ज्ञान भी कराती है। गुरबाणी प्रेम, सत्य और धर्म की बाणी है, जो सेवा, सिमरन व समर्पण का संदेश देती है और उन जीवन-मूल्यों का चित्रण करती है जो मनुष्य को मनुष्य तथा उसके जीवन को जीवन बनाते हैं। श्री गुरु अमरदास जी ने फरमान किया है कि गुरबाणी पूरे संसार को प्रकाशित करती है और परमात्मा की कृपा से मन को भी। मन का प्रकाश ही जीवन के प्रबंधन का सार है :

गुरबाणी इसु जग महि चानणु
करमि वसै मनि आए॥ *(पन्ना ६७)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बाणी में वर्णित जीवन-प्रबंधन के संदेशों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :—

विनम्रता (नम्रता) : मनुष्य के स्वभाव की सरलता, सहजता और लचीलापन ही नम्रता है। अहं-भाव के त्याग से नम्रता आती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्ति और नम्रता के संबंध का वर्णन है कि बिना नम्रता के भक्ति नहीं होती और बिना भक्ति के मनुष्य विनम्र नहीं बनता। यही विनम्रता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य को सफलता प्रदान करती है। श्री गुरु नानक देव जी ने तराजू का उदाहरण देकर कहा है कि तराजू का वही पलड़ा भारी होता है, जो झुका हुआ होता है :

धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ॥
(पन्ना ४७०)

गुरुदेव का मत है कि जब मनुष्य को इस नश्वर संसार में रहना ही नहीं है, तो जीवन को अहं-भाव से नष्ट करने की क्या आवश्यकता है?

जा रहणा नाही ऐतु जगि
ता काइतु गारबि हंढीऐ॥ *(पन्ना ४७३)*

श्री गुरु रामदास जी के अनुसार अपने अवगुणों को पहचान कर अहं-भाव को नष्ट किया जा सकता है और स्वभाव को विनम्र बनाया जा सकता है :

किआ हम किरम किआ करम कमावहि
मूरख मुगध रखे प्रभ तास॥
अवगनी आरे पाथर भारे

**आभार, आजाद नगर, उज्जैन। फोन : ९८९३४-४१७६०*

सतसंगति मिलि तरे तरास ॥ (पन्ना १२९५)

श्री गुरु अरजन देव जी ने विनम्रता को एक शस्त्र बताया है कि गरीबी (विनम्रता) मनुष्य की गदा है। मनुष्य को सभी लोगों की चरण-धूलि बन कर जीना चाहिए। विनम्रता के शस्त्र से सभी को पराजित किया जा सकता है :

गरीबी गदा हमारी ॥
खंना सगल रेनु छारी ॥
इसु आगै को न टिकै वेकारी ॥
गुर पूरे एह गल सारी ॥ (पन्ना ६२८)

गुरुदेव ने मनुष्य को झूठे मान-सम्मान और अभिमान के त्याग का संदेश दिया है। विनम्रता से ही परमात्मा की कृपा प्राप्त की जा सकती है :

तिआगि मानु झुठु अभिमानु ॥
जीवत मरहि दरगह परवानु ॥ (पन्ना १७६)

स्पष्ट है कि गुरबाणी में अहं-भाव का त्याग कर विनम्र होने का संदेश है। जीवन में सफलता के लिए व्यक्तित्व में विनम्रता का गुण होना आवश्यक है। विनम्रता सभी गुणों का सार है :

जिनी सचु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि ॥
हउमै त्रिसना मारि कै सचु रखिआ उर धारि ॥
(पन्ना ५५)

गुरुदेव के अनुसार झूठे आचरण के कारण ही मनुष्य लोक-परलोक में दुखी होता है। जो सत्य से प्रेम करते हैं, उनका सर्वत्र सम्मान होता है। सत्य ही मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है :

अवगण बाधि चली दुखु आगै
सुखु तिसु साचु समाले ॥ (पन्ना ११०८)

भक्त कबीर जी के अनुसार जहां ज्ञान है, वहां धर्म है और जहां झूठ है, वहां पाप ही पाप होता है :

कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है
जहा झूठु तह पापु ॥ (पन्ना १३७२)

निर्भयता : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भय-भाव का वर्णन है। भय के कारण परमात्मा के प्रति जो प्रेम उत्पन्न होता है, वह भाव है। यह स्थिति जीवन-प्रबंधन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह भय मनुष्य को मनोविकारों से मुक्त करता है। श्री गुरु नानक देव जी का संदेश है कि मनुष्य को भी परमात्मा की भांति निर्भय होना चाहिए। जब परमात्मा का शरीर में आत्मा रूप में वास है, तो भय किस बात का! निर्भय होना मानवीय स्वतंत्रता के लिए भी आवश्यक है।

श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार भय के कारण ही मनुष्य भक्ति की दिशा में प्रवृत्त होता है और उसका मन शुद्ध, पवित्र एवं निर्मल हो जाता है :

भै बिनु लागि न लगई ना मनु निरमलु होइ ॥
बिनु भै करम कमावणे झूठे ठाउ न कोइ ॥
(पन्ना ४२७)

भक्ति के कारण जीवन के प्रति आस्था और

विश्वास बढ़ता है, सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। साधु-संतों की संगत से मन निर्मल होता है और जन्म-मरण का भय समाप्त हो जाता है।

श्री गुरु रामदास जी के अनुसार जो निर्भय परमात्मा का नाम ध्यान करते हैं, उनका सारा भय समाप्त हो जाता है। उन्हें किसी प्रकार का भय नहीं लगता :

जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी
तिन का भउ सभु गवासी ॥ (पन्ना ११)

श्री गुरु तेग बहादर जी के अनुसार जीवन में न तो किसी को भयभीत करना चाहिए और न ही किसी से भयभीत होना चाहिए :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
(पन्ना १४२७)

निर्वैरता : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वैर-विरोध को दुख का प्रमुख कारण बताया गया है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार मनुष्य को परमात्मा के समान निर्वैर होना चाहिए। आत्मा, परमात्मा का ही अंश है। श्री गुरु अरजन देव जी का संदेश है कि जो मनुष्य किसी दूसरे का बुरा नहीं सोचता, उसे कभी कोई दुख या क्लेश नहीं होता :

पर का बुरा न राखहु चीत ॥
तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥ (पन्ना ३८६)

गुरुदेव के अनुसार न कोई शत्रु है और न कोई गैर। सभी के साथ समान व्यवहार बनाना चाहिए। परमात्मा सदा भला करता है। यह सुबुद्धि साधु-संतों से प्राप्त होती है :

ना को बैरी नही बिगाना
सगल संगि हम कउ बनि आई ॥१ ॥
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ
एह सुमति साधू ते पाई ॥ (पन्ना १२९९)

वैर-विरोध के कारण विवाद और कलह उत्पन्न होती है। गुरबाणी में मनुष्य का मनुष्य के साथ कोई भी विवाद या झगड़ा परमात्मा से विवाद या झगड़ा माना गया है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार मनुष्य को किसी के बारे न तो बुरा बोलना चाहिए और न किसी व्यर्थ वाद-विवाद में पड़ना चाहिए :

— मंदा किसै न आखि झगड़ा पावणा ॥
नह पाइ झगड़ा सुआमि सेती
आपि आपु वञावणा ॥ (पन्ना ५६६)
— हम नही चंगे बुरा नही कोइ ॥
प्रणवति नानकु तारे सोइ ॥ (पन्ना ७२८)

भक्त शेख फरीद जी का इस संबंध में महत्वपूर्ण संदेश है कि मनुष्य को क्रोध का त्याग करना चाहिए और जिसने बुरा किया है, उसका भला करना चाहिए :

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥
(पन्ना १३८१)

मधुर वचन : भक्त कबीर जी का कथन है कि मनुष्य को शब्दों का प्रयोग

सावधानीपूर्वक करना चाहिए। कोई शब्द वार-प्रहार का काम करता है, कोई औषधि का। वाणी ऐसी होनी चाहिए कि मनुष्य स्वयं भी शीतल हो और सुनने वाले को भी शांति एवं शीतलता प्रदान करे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मधुरता और विनम्रता को जीवन में सफलता के लिए आवश्यक बताया गया है।

श्री गुरु नानक देव जी ने कभी भी कटु वचनों का प्रयोग न करने का संदेश दिया है। कड़वा बोलने से मनुष्य का तन तथा मन भी कड़वा हो जाता है और वह मूर्ख माना जाता है:

नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥
फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥
(पन्ना ४७३)

गुरुदेव का संदेश है कि मधुरता और विनम्रता सद्गुणों का सार है। विसंगति यह है कि हर कोई अपने प्रति झुकता है, किसी दूसरे के सामने नहीं झुकता है :

मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥
सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥
(पन्ना ४७०)

श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार प्रत्येक मनुष्य में परमात्मा का वास है। एक भी कटु शब्द बोल कर दूसरों का दिल नहीं दुखाना चाहिए :

इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥
(पन्ना १३८४)

क्षमाशीलता : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में क्षमा को समस्त गुणों का मूल निरूपित किया गया है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार क्षमा-भाव से शील तथा संतोष का भाव उत्पन्न होता है और रोगों से रक्षा होती है :

खिमा गही ब्रतु सील संतोखं ॥
रोगु न बिआपै ना जम दोखं ॥ (पन्ना २२३)

वस्तुत: क्षमा मानवीय गुणों का आधार है। क्षमा करने से काम, क्रोध, मद, लोभ, मत्सर, निंदा आदि अवगुण नष्ट हो जाते हैं और प्रेम, त्याग, दया, संतोष आदि सद्गुण उत्पन्न होते हैं। श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार क्षमा अहम्, तृष्णा, क्रोध आदि रोगों का निवारण करती है :

हउमै त्रिसना सभ अगनि बुझई ॥
बिनसे क्रोध खिमा गहि लई ॥ (पन्ना २३३)

श्री गुरु रामदास जी ने परमात्मा की प्राप्ति के लिए क्षमा का गुण आवश्यक बताया है कि जो क्षमाशील हैं, उनसे परमात्मा सदा प्रसन्न रहता है :

खिमा सीगार करे प्रभ खुसीआ
मनि दीपक गुर गिआनु बलईआ ॥
(पन्ना ८३६)

श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार नाम भक्तों की पूंजी है। गुरुदेव का संदेश है कि क्षमा, आनंद, सहजता, विनम्रता आदि गुणों के साथ भक्ति करना ही श्रेष्ठ है :

खिमा गरीबी अनद सहज

जपत रहहि गुणतास ॥ (पन्ना २५३)

भक्त कबीर जी के अनुसार जहां लोभ है, वहां काल है और जहां क्षमा है, वहां परमात्मा स्वयं निवास करता है :

जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि ॥
(पन्ना १३७२)

मन पर नियंत्रण : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मन को नियंत्रित करने के उपायों और प्रभावों का वर्णन है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार मन पर नियंत्रण द्वारा ही संसार पर विजय पाई जा सकती है :

. . . मनि जीतै जगु जीतु ॥ (पन्ना ६)

गुरुदेव ने मन पर नियंत्रण पाने के लिए परमात्मा की भक्ति को आवश्यक बताया है। भक्ति से मन तृप्त व शांत होता है और मनुष्य को सच्चा सुख प्राप्त होता है। एकाग्र मन से सृष्टि के गुप्त रहस्यों को समझा जा सकता है। एकाग्र मन दृश्यादृश्य सभी को देख सकता है :

नानक मनु त्रिपतासीऐ सिफती साचै नाइ ॥
(पन्ना १०८७)

श्री गुरु अमरदास जी ने मन पर संयम और नियंत्रण पाने के लिए सतिगुरु की शरण में जाने का संदेश दिया है। सतिगुरु की कृपा से चमत्कारिक परिवर्तन हो जाते हैं :

इसु मन कउ होरु संजमु को नाही
विणु सतिगुर की सरणाइ ॥
सतगुरि मिलिऐ उलटी भई
कहणा किछू न जाइ ॥ (पन्ना ५५८)

गुरुदेव के अनुसार मन को निर्मल करने के लिए आवश्यक है कि गुरु के विचारों को आत्मसात कर अहंकार आदि विकारों को नष्ट किया जाए :

मनु सबदि मरै परतीति होइ हउमै तजे विकार ॥
जन नानक करमी पाईअनि
हरि नामा भगति भंडार ॥ (पन्ना १६२)

गुरुदेव ने मन के नियंत्रण के लिए सत्य को जीवन का आधार बनाने का संदेश दिया है। सत्य ही सुख-शांति का आधार है :

मन मेरिआ तू सदा सचु समालि जीउ ॥
(पन्ना ५६९)

श्री गुरु रामदास जी ने मन पर नियंत्रण के लिए गुरु की शरण को ही महत्वपूर्ण बताया है। गुरु की शिक्षा से ही मन स्थिर होता है और मुक्ति पाई जा सकती है :

बिनु गुर मनूआ ना टिकै
फिरि फिरि जूनी पाइ ॥ (पन्ना ३१३)

श्री गुरु अरजन देव जी मन पर नियंत्रण पाने के लिए परमात्मा की शरण में जाने का संदेश देते हैं कि परमात्मा का नाम-जप ही एकमात्र उपाय है :

पारब्रहम पूरन परमेसुर मन ता की ओट गहीजै रे ॥
जिनि धारे ब्रहमंड खंड हरि ता को नामु जपीजै रे ॥
(पन्ना २०९)

तृष्णाओं पर नियंत्रण : श्री गुरु ग्रंथ साहिब

में आसा-मनसा शब्दों का प्रयोग किया गया है। आसा अर्थात् इच्छा और मनसा अर्थात् तृष्णा। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार मनुष्य की तृष्णाओं की भूख कभी शांत नहीं होती, चाहे वह कितने ही सांसारिक पदार्थों का उपभोग क्यों न कर ले। उसकी तृष्णा निरंतर बढ़ती रहती है :

भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार॥
सहस सिआणपा लख होहि
त इक न चलै नालि॥ *(पन्ना १)*

श्री गुरु अमरदास जी ने मनुष्य के मन की तुलना एक अंधे कुएं से की है, जिसमें कुछ भी स्पष्ट नहीं है। गुरुदेव ने आसा-मनसा की मोहिनी शक्ति का वर्णन किया है कि तृष्णा में पूरा संसार मोहित है, जबकि सत्य यह है कि सभी नाशवान हैं। मृत्यु निश्चित है। गुरुदेव ने एक पद में कहा है कि पूरा संसार तृष्णा की आग में जल रहा है। सतिगुरु की कृपा से उस आग को बुझाया जा सकता है :

आसा मनसा जगि मोहणी
जिनि मोहिआ संसारु॥
सभु को जम के चीरे विचि है
जेता सभु आकारु॥ *(पन्ना ८५१)*

श्री गुरु अरजन देव जी ने परमात्मा के अलावा किसी भी इच्छा को दुखों का दुख कहा है। गुरुदेव के अनुसार तृष्णा से मुक्ति का एकमात्र उपाय है— संतोष। परमात्मा से सदा संतोष की प्रार्थना करनी चाहिए। संतोष से ही मन की शांति और सुख प्राप्त होता है, वरना मन की भूख कभी शांत नहीं होती :

विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख॥
देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख॥
(पन्ना ९५८)

वस्तुतः जहां तृष्णा है, वहां संतोष नहीं, और जहां संतोष है, वहां तृष्णा नहीं। जीवन में प्रगति के लिए सुख और शांति का होना आवश्यक है। जीवन-प्रबंधन की दृष्टि से तृष्णाओं पर नियंत्रण अति आवश्यक है।

चिंता-मुक्त जीवन : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बाणीकारों ने चिंता रोग का वर्णन किया है। श्री गुरु नानक देव जी ने चिंता की व्यापकता का वर्णन किया है कि हर कोई चिंतित है और दुखी है। यदि मनुष्य परमात्मा का स्मरण करे तो चिंताओं से मुक्त हो सकता है और सुख प्राप्त कर सकता है :

चिंतत ही दीसै सभु कोइ॥
चेतहि एकु तही सुखु होइ॥
चिति वसै राचै हरि नाइ॥
मुकति भइआ पति सिउ घरि जाइ॥
(पन्ना ९३२)

श्री गुरु अमरदास जी ने चिंता के निवारण के लिए सतिगुरु की सेवा का सुझाव दिया है। गुरुदेव के अनुसार जब गुरु की कृपा से सदा निश्चिंत परमात्मा का वास हृदय में हो जाता है,

तो चिंता से कोई दुख नहीं होता :

सतिगुरि सेविऐ सदा सुखु
जनम मरण दुखु जाइ ॥
चिंता मूलि न होवई अचिंतु वसै मनि आइ ॥

(पन्ना ५८७)

श्री गुरु अरजन देव जी ने भी चिंता-निवारण के लिए परमात्मा की प्रेमा-भक्ति का संदेश दिया है कि नाम के जाप से ही चिंता और अहंकार समाप्त होते हैं तथा मनुष्य को सुख-शांति का अनुभव होता है :

जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥
नामु जपत मनि होवत सूख ॥
चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥
तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥

(पन्ना २९३)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब मृत्यु के भय से उत्पन्न चिंता के संबंध में कहते हैं कि इस संसार में कुछ भी स्थिर और स्थायी नहीं है। मनुष्य को उसकी चिंता करनी चाहिए जो अनहोनी हो। मृत्यु होनी है अर्थात् निश्चित है, उसकी चिंता करना व्यर्थ है :

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥

(पन्ना १४२९)

पर-निंदा नियंत्रण : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पर-निंदा के प्रभावों का वर्णन किया गया है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार झूठ और निंदा दोनों उचित नहीं हैं। झूठ बोलना यदि पाप है तो झूठी निंदा करना महापाप है। गुरुदेव के अनुसार झूठ बोलने वाले श्वान के समान हैं और जो गुरु की निंदा करते हैं, वे अपनी ही अग्नि में जल जाते हैं। गुरुदेव के अनुसार निंदक हमेशा दुखी व भ्रमित रहते हैं तथा भटकते रहते हैं :

कूकर कूडु कमाईऐ गुर निंदा पचै पचानु ॥
भरमे भूला दुखु घणो जमु मारि करै खुलहानु ॥

(पन्ना २१)

श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार निंदा करने वालों का मुंह काला होता है और वे भयानक नरक की सजा पाते हैं। गुरुदेव के अनुसार किसी की निंदा करना उचित नहीं है। जो निंदक हैं, वे मूर्ख और आत्ममुग्ध मनमुख हैं। निंदक को आत्म-परीक्षण करना चाहिए :

निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध कंरनि ॥
मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि ॥

(पन्ना ७५५)

श्री गुरु रामदास जी ने निंदक को दुष्ट बताया है। गुरुदेव के अनुसार जो निंदा करते हैं, उनकी नाक कट जाती है और वे शर्मसार होते हैं। वे दुखी और अत्यंत कुरूप हो जाते हैं। माया के प्रभाव से उनका चेहरा भी काला हो जाता है अर्थात् निंदक स्वयं भी निंदित हो जाता है :

जिन अंदरि निंदा दुसटु है

नक वढे नक वढाइआ ॥
महा करूप दुखीए सदा काले मुह माइआ ॥
(पन्ना १२४४)

श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार निंदक बालू की रेत के समान ढह जाते हैं। निंदक बुराई देखकर प्रसन्न होते हैं और अच्छाई देख कर दुखी। वे लगातार निंदा का बुरा विचार सोच-सोच कर ही मर जाते हैं :

निंदकु ऐसे ही झरि परीऐ ॥
इह नीसानी सुनहु तुम भाई
जिउ कालर भीति गिरीऐ ॥१ ॥रहाउ ॥
जउ देखै छिद्रु तउ निंदकु उमाहै
भलो देखि दुख भरीऐ ॥
आठ पहर चितवै नही पहुचै
बुरा चितवत चितवत मरीऐ ॥ (पन्ना ८२३)

गुरुदेव ने निंदा के प्रभाव के चित्रण में कहा है कि मुक्ति के लिए मनुष्य को सर्वप्रथम पराई निंदा करनी छोड़नी चाहिए, तब ही उसकी सारी चिंताएं समाप्त होंगी। वह लोभ, मोह आदि विकारों से मुक्त होगा और परम भक्त के रूप में परमात्मा की कृपा प्राप्त कर पाएगा :

प्रथमे छोडी पराई निंदा ॥
उतरि गई सभ मन की चिंदा ॥
लोभु मोहु सभु कीनो दूरि ॥
परम बैसनो प्रभ पेखि हजूरि ॥ (पन्ना ११४७)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के अनुसार स्तुति और निंदा दोनों का त्याग किया जाना चाहिए, तभी मुक्ति प्राप्त हो सकती है। केवल गुरमुख बनकर ही इस (कठिन) कार्य को किया जा सकता है :

उसतति निंदा दोऊ तिआगै
खोजै पदु निरबाना ॥
जन नानक इहु खेलु कठनु है
किनहूं गुरमुखि जाना ॥ (पन्ना २१९)

मनोविकारों का निवारण : जीवन में सफलता पाने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य मनोविकारों को नियंत्रित करे। काम, क्रोध, लोभ, मोह से जीवन की सुख-शांति भंग हो जाती है और मनुष्य का आत्मिक विकास रुक जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इन विकारों को पांच चोर कहा गया है, जो मन में रह कर नाम रूपी धन की चोरी करते हैं, जिससे मनुष्य दुखी हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी ने इन मनोविकारों का त्याग करने का संदेश दिया है :

छोडहु प्राणी कूड़ कबाड़ा ॥...
छोडिहु निंदा ताति पराई ॥
पड़ि पड़ि दझहि साति न आई ॥...
छोडहु काम क्रोधु बुरिआई ॥
हउमै धंधु छोडहु लंपटाई ॥ (पन्ना १०२५)

गुरुदेव के अनुसार काम और क्रोध दोनों अग्नि के समान हैं। इनमें मनुष्य का शरीर वैसे ही नष्ट हो जाता है, जैसे सुहागा बनाने में सोना गल जाता है :

कामु क्रोधु काइआ कउ गालै ॥

जिउ कंचन सोहागा ढालै ॥ (पन्ना ९३२)

गुरुदेव ने निर्दयता, मोह, लोभ, क्रोध को अग्नि की चार नदियां बताया है और उनमें गिर कर जलने से बचने के लिए हमेशा शुभ कर्म करने का संदेश दिया है :

हंसु हेतु लोभु कोपु चारे नदीआ अगि ॥
पवहि दझहि नानका तरीऐ करमी लगि ॥
(पन्ना १४७)

श्री गुरु अमरदास जी ने काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार को पांच चोर बताया है। ये हमारे शरीर में निवास करते हैं और शरीर के अमृत को लूटते हैं। मनमुख इस बात को नहीं समझ पाते और न कोई मनमुखों की शिकायत पर ध्यान देता है :

इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि
कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥
अंम्रितु लूटहि मनमुख नही बूझहि
कोइ न सुणै पूकारा ॥ (पन्ना ६००)

वस्तुत: इन मनोविकारों से मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, जिससे क्षमा, दया, नम्रता, प्रेम, संतोष आदि नैतिक मानवीय गुण नष्ट हो जाते हैं और मनुष्य का जीवन दुर्भाग्यपूर्ण हो जाता है। जीवन-प्रबंधन में जिन नैतिक मूल्यों की आवश्यकता होती है वे खंडित हो जाते हैं।

श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार माया-जाल में फंसने के कारण ही ये मनोविकार उत्पन्न होते हैं। इन विकारों के कारण मुक्ति प्राप्त नहीं होती और मनुष्य आवागमन के चक्र में उलझा रहता है। गुरुदेव ने विकारों को शरीर रूपी नगर के ठग बताया है :

काम क्रोध मदि बिआपिआ
फिरि फिरि जोनी पाइ ॥२ ॥
माइआ जालु पसारिआ भीतरि चोग बणाइ ॥
(पन्ना ५०)

श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार परमात्मा की भक्ति से मनोविकार नष्ट होते हैं और मुक्ति प्राप्त होती है :

कामि क्रोधि अहंकारि विगूते ॥
हरि सिमरनु करि हरि जन छूटे ॥
(पन्ना ३८८)

इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जीवन-प्रबंधन के कई महत्वपूर्ण सूत्र हैं, एक विशेष आध्यात्मिक जीवन-शैली के अनुसार जीने का आह्वान है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, चाहे वह सामाजिक हो या धार्मिक, आर्थिक हो या राजनीतिक, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं, संदेशों और उपदेशों को आत्मसात कर सफलता प्राप्त की जा सकती है।

महान् विद्वान और अमर शहीद भाई मनी सिंघ जी

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सिक्ख कौम के अमर शहीदों की लासानी शहादत की गाथा पढ़ते-सुनते समय रौंगटे खड़े हो जाते हैं, मन में जोश भर जाता है, अत्याचार, अन्याय तथा अधर्म के विरुद्ध जूझने के लिए जज्बा पैदा हो जाता है। अपनी लासानी कुर्बानियों द्वारा सिक्ख कौम के बहादुर व साहसी शहीदों ने पूरे विश्व को दिखाया है कि जब्रो-जुल्म का सामना साहस, सब्र, जोश के साथ किया जाना चाहिए। जितने ज्यादा शहीद सिक्ख कौम में हुए हैं, उतने अन्य किसी भी कौम में नहीं हुए। सिक्ख इतिहास में बाल्यावस्था के शहीदों से लेकर वृद्धावस्था के शहीदों तक की एक शानदार, सुनहरी एवं अद्वितीय विरासत मौजूद है। इसी महान् विरासत का एक महत्वपूर्ण अंग हैं— बंद-बंद, (अंग-अंग) कटवाकर, अदम्य साहस का परिचय देते हुए शहीद होने वाले शहीद भाई मनी सिंघ जी।

भाई मनी सिंघ जी का जन्म अलीपुर (वर्तमान में जिला मुजफ्फरगढ़ पाकिस्तान) में सन् १६४४ में श्री माई दास तथा माता मधुरी बाई के घर हुआ। कई विद्वान भाई मनी सिंघ जी का जन्म कैंबोवाल (सुनाम-पटियाला) में हुआ बताते है।

पांच वर्ष की बाल्यावस्था से ही इन्हें श्री गुरु हरिराय साहिब के सान्निध्य में गुरु-घर की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा किए गए युद्धों में भी ये भाग लेते रहे। सन् १६९९ ई. की वैसाखी वाले दिन खंडे-बाटे का अमृत-पान कर ये बाकायदा सिंघ सज गए।

सन् १७०४ ई. में गुरु-परिवार पर आई विपदा के समय भाई मनी सिंघ जी दशम पातशाह जी की आज्ञानुसार माता सुंदरी जी तथा माता साहिब कौर जी के साथ दिल्ली चले गए। इसके बाद दमदमा साहिब तलवंडी साबो आ गए। यहां पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित करवाने हेतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब को भाई मनी सिंघ जी से पुनः लिपिबद्ध करवाया। माता सुंदरी जी की इच्छा व आज्ञानुसार और उनकी आगवानी में दशम पिता द्वारा उच्चरित बाणी को एकत्र कर 'दसम ग्रंथ' तैयार किया।

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; मो. ९८७२२-५४९९०*

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद सिंघों के बीच वैचारिक मतभेद पैदा हो गए। 'तत्त खालसा' तथा 'बंदई खालसा' के बीच जब टकराव बढ़ गया, तब झगड़ा खत्म करवाने के लिए माता सुंदरी जी ने भाई मनी सिंघ जी को दिल्ली से श्री अमृतसर भेजा। खालसा पंथ की सभी जत्थेबंदियां इनका सम्मान करती थीं। जब ये श्री अमृतसर पहुंचे, तब दोनों दलों ने यही इच्छा व्यक्त की कि ये श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के प्रबंध की जिम्मेदारी स्वयं संभाल लें। भाई मनी सिंघ जी के प्रयत्न स्वरूप 'तत्त खालसा' एवं 'बंदई खालसा' के बीच झगड़ा समाप्त हो गया। भाई मनी सिंघ जी श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी नियुक्त हुए। साथ में इन्हें श्री अकाल तख्त साहिब का जत्थेदार भी बना दिया गया।

भाई मनी सिंघ जी गुरमति विचारधारा के बहुत बड़े विद्वान हुए हैं। इनके द्वारा रचित 'गिआन रतनावली' तथा 'भगत रतनावली' दो बहुमूल्य कृतियां हैं। इनमें इन्होंने गुरमति दर्शन को गद्य रूप में बाखूबी प्रस्तुत किया है।

जालिम जकरिया खान जब पंजाब का गवर्नर बना, तब उसने सिक्खों पर जब्रो-जुल्म बढ़ा दिया। अपने घर में शांतिपूर्वक सिक्खों का रहना उसने असंभव बना दिया। सिक्ख जत्थे बनाकर जंगलों एवं बीहड़ों में रहने लगे और सरकार को कड़ी टक्कर देने लगे। नवाब कपूर सिंघ के नेतृत्व में सिंघों ने सरकार का काफिया तंग कर दिया। जकरिया खान सिंघों से और अधिक चिढ़ने लगा। उसने गुरुद्वारा साहिबान को ढहाना शुरू कर दिया। श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर के इर्द-गिर्द पहरे बैठा दिए, ताकि कोई श्रद्धालु भीतर प्रवेश न कर सके। इस मुश्किल समय में भाई मनी सिंघ जी अपने कुछ मुस्लिम मित्रों के सहयोग से तथा सूझबूझ से ये सरकारी पहरे उठवाने में कामयाब रहे।

भाई मनी सिंघ जी ने देखा कि सरकार की ज्यादतियों के कारण बहुत कम संख्या में सिक्ख संगत श्री दरबार साहिब में आ रही है। इन्होंने श्री अमृतसर के शासक अब्दुल्ला खान से बात की और उससे बंदी छोड़ दिवस (दीवाली) पर सिक्खों की एक बड़ी सभा करने की अनुमति मांगी। उसने गवर्नर ज़कारिया खान से बातचीत कर इस शर्त पर अनुमति दी कि समारोह के आयोजन हेतु सरकार को दस हज़ार रुपए कर रूप में अदा किए जाएं। भाई मनी सिंघ जी ने यह शर्त यह सोचकर मान ली कि जब सभा में बड़ी सख्या में संगत आएगी तो यह राशि अदा कर दी जाएगी।

भाई मनी सिंघ जी एक बड़ी सभा द्वारा सिक्ख कौम में एक नई लहर पैदा करना

चाहते थे, जोश व उत्साह भरना चाहते थे। इन्होंने सूचना भेज दी कि सभी सिक्ख बंदीछोड़ दिवस पर श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर पहुंचें। लोग तैयारी करने लगे। उनमें उत्साह व जोश की कोई सीमा न रही। सभी बहुत ज्यादा खुश थे।

सिक्खों के उत्साह का समाचार पाकर ज़करिया खान की नीयत बदल गई। उसने षड्यंत्र रच डाला कि जब सिक्ख श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर में इकट्ठा हों तब भारी हमला कर सभी को खत्म कर दिया जाए। उसने एक बड़ी फ़ौज भेज दी और आदेश दिया कि एक भी सिक्ख जिंदा बचकर नहीं जाना चाहिए। सौभाग्य से सरकारी फौज पहुंचने से पहले ही भाई मनी सिंघ जी को उसके षड्यंत्र का पता चल गया और भाई साहिब ने सिक्ख संगत को श्री दरबार साहिब आने से मना कर दिया।

बंदी छोड़ दिवस के पश्चात् ज़करिया खान ने तय हुए दस हजार रुपए की मांग की तो भाई मनी सिंघ जी ने मना करते हुए कहा, ''चढ़ावा आता तो रुपए दिए जाते। तुम्हारी हमला करने की नीयति को भांपते हुए संगत इकट्ठा नहीं हो सकी, इसलिए रुपए किस बात के दिए जाएं?'' भाई मनी सिंघ जी को गिरफ्तार कर लाहौर दरबार लाया गया। वहां अहंकारी और षड्यंत्रकारी ज़करिया खान भाई साहिब से बोला, ''यह राशि एक ही सूरत में माफ की जा सकती है, यदि आप इसलाम धर्म में शामिल हो जाएं।'' भाई मनी सिंघ जी ने दृढ़तापूर्वक एवं निडरतापूर्वक उत्तर दिया, ''मैं अपने गुरु का दामन और अपना धर्म किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ सकता।''

इस पर इनका वाद मौलवियों के सामने पेश किया गया। उन्होंने बंद-बंद (अंग-अंग) काटकर शहीद करने का फतवा सुना दिया। जब जल्लाद सर्वप्रथम इनकी लात काटने लगा, तो चढ़दी कला, बुलंद हौसले में रहने वाले भाई मनी सिंघ जी ने कहा, ''तुझे बंद-बंद काटने का हुक्म हुआ है, इसलिए एक-एक बंद काट!'' जल्लाद यह सुनकर दंग रह गया।

भाई मनी सिंघ जी के शरीर का एक-एक अंग काटा गया। ये आंखें बंद किए गुरबाणी का जाप करते रहे। बंद-बंद कटवाकर शहादत प्राप्त करने वाले भाई मनी सिंघ जी को सन् १७३४ ई. में शहीद कर दिया गया। इस शहादत ने सिक्ख समुदाय में ऐसा जोश भर दिया कि सिंघों ने जंगलों में से निकल कर मिसलें बना लीं और अंत में क्रूर, निर्दयी, अन्यायी, जालिम सरकार को नेस्तनाबूद कर दिया।

सिक्ख पंथ का गौरव : भाई तारू सिंघ जी

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

भाई गुरदास जी ने जब सिक्ख पंथ का अनुसरण करने को खंडे की तीखी धार पर चलने की उपमा दी थी तो लगा था कि उनका मनोरथ गुरबाणी के उपदेशों का पालन करने के लिए मन व तन की पूर्ण एकाग्रता तथा विकारों एवं माया-मोह पर विजय प्राप्त कर निर्लिप्त हो जाना ही रहा होगा। परिदृश्य बदला और बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहीदी के बाद सिक्खों को जुल्म के उस दौर से गुजरना पड़ा जो अकल्पनीय अवश्य था, किन्तु सैद्धांतिक समर्पण ने सिक्खों को सहज ही उसका सामना करने की क्षमता प्रदान की। पंजाब का गवर्नर जकरिया खान बन चुका था। उसने सिक्खों के समूल नाश का संकल्प लेकर अपनी फ़ौज को सिक्खों के खातिमे पर लगा दिया। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में भाई रतन सिंघ (भंगू) के दिये गये विवरण के अनुसार गुरुद्वारों में आने वाले चढ़ावे को लूट लिया गया। सिक्खों को अन्न-भोजन से विहीन कर दिया गया। फौज ढूंढ-ढूंढ कर सिक्खों को मार रही थी। जहां-जहां सिक्ख निवास करते थे वे सारे नगर, गांव उजाड़ कर वीरान कर दिये गये। सिक्खों ने अपने घर छोड़ दिये और जंगलों में वेश बदल कर रहने को विवश हो गये, किन्तु अपने धर्म पर अडिग रहे। उनके सगे-सम्बन्धियों को भी मारा जा रहा था। भाई रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार मुगल स्वयं को शेर और सिक्खों को बटेर समझ रहे थे। इसी कालखंड में भाई तारू सिंघ जी बड़े हो रहे थे।

ज्ञानी दित्त सिंघ ने अपनी कृति 'भाई तारू सिंघ दी शहीदी' में लिखा है कि सिक्ख भी अवसर मिलते ही मुगलों का काल बन जाते थे। मुखबिरी करने वालों को भी ढूंढ कर सिक्ख दंड दिया करते थे। जब सिक्ख जंगलों में चले गये, उस समय भाई तारू सिंघ जी श्री अमृतसर के पूहला नामक गांव में रह रहे थे। बाल्यावस्था में ही पिता का निधन हो जाने के कारण, माता की देख-रेख में उनका पालन-पोषण हुआ। उनकी माता धार्मिक प्रवृत्ति की थीं, जिससे भाई तारू सिंघ जी भी गुरबाणी से जुड़ गये और सिक्खी में परिपक्व हो गये। उदार एवं संवेदनशील स्वभाव के कारण उनसे सिक्खों के कष्ट देखे नहीं जाते थे। जो भी सिक्ख उन्हें कष्ट में या पलायित अवस्था में मिल जाता, उसे घर ले आते। घर में वे, उनकी माता व बहन मिल कर ऐसे सिक्खों को भोजन

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४१७८-५२८९९*

कराते, सेवा-शुश्रूषा करते। भाई तारू सिंघ जी ने इसे अपनी दिनचर्या ही बना लिया था :

सदा उस नूं कंम न दूजा, एहो करदा पिआरा।
सिंघां दी सेवा दे उप्पर, तन मन उहने वारा।

(भाई तारू सिंघ दी शहीदी, पृष्ठ २)

उस समय जब जकरिया खान के अत्याचारों की कोई सीमा नहीं थी और अधिकांश सिक्ख या तो खत्म (शहीद) कर दिये गये थे या जो बचे थे, वे जंगलों में शरण लेने को विवश हो गये थे, उनकी सहायता के लिए भाई तारू सिंघ जी का आगे आना अपार साहस व अविचल संकल्प का परिचायक था। ज्ञानी दित्त सिंघ के अनुसार भाई तारू सिंघ जी की सेवा व समर्पण की सिक्खों में चर्चा होने लगी। जरूरतमन्द सिक्ख उनके घर आने लगे। भाई तारू सिंघ जी बड़े प्रेम व सत्कार से उनकी आवभगत करते व भोजन कराते। स्वयं वे भुने चने खाकर ही पेट भर लेते थे। उस समय सिक्खों ने अपनी रणनीति बदल ली थी। जंगलों में सिक्ख दस-बीस की संख्या में समूह बनाकर विचरण करते और अवसर मिलते ही अचानक तेजी से मुगलों पर हमला कर, उन्हें मार-लूट कर अदृश्य हो जाते थे। सिक्खों की इस रणनीति से मुगल स्वयं को असहाय महसूस करने लगे थे। मुगल सिक्खों पर जितने बल से वार करते, उससे अधिक स्फूर्ति से सिक्ख अपना बचाव करने में सफल हो जाते। सिक्ख तमाम विकट परिस्थितियों के बावजूद भी वीर रस से भरे हुए थे। उस समय गांव मीरांकोट के रहने वाले सिक्ख भाई महिताब सिंघ ने अपनी वीरता से मुगलों को विशेष रूप से भयभीत कर रखा था। उनके नेतृत्व में सिक्ख जान हथेली पर रख कर मुगलों पर गुरिल्ला आक्रमण कर रहे थे। पलक झपकते ही वे प्रकट होते और मुगलों का सफाया कर निकल जाते।

भाई तारू सिंघ जी मुगलों से बच कर रात्रि में सिक्खों को आवश्यकता का सामान उपलब्ध कराया करते थे। उनके घर पर लंगर अटूट चल रहा था। सिक्खों के विरोधियों ने भाई तारू सिंघ जी की गतिविधियों को भांप लिया। मुखबिरी हरभगत निरंजनिया ने भाई तारू सिंघ जी की मुखबिरी गवर्नर जकरिया खान के पास जाकर की जो स्वयं आश्चर्यचकित था कि उसके इतने जुल्मों के बाद भी सिक्खों का अस्तित्त्व कैसे बचा हुआ है। उसकी शिकायत को भाई रतन सिंघ (भंगू) ने इस तरह कलमबद्ध किया है :

हरभगत निरंजनीए यौं फिर कही।
पूल्हो पिंड इक माझे अही।
तारू सिंघ तहिं खेती करै।
साथ पिंड वहि हाला भरै॥ १७॥
देह हाकम कछु थोड़ा खावै।
बचै सिंघन के पास पुचावै।''

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ३४६)

हरभगत निरंजनिये ने कहा कि भाई तारू

सिंघ जी, जो पूल्हा नामक गांव में खेती करते हैं, वे स्वयं पर अल्प ही खर्च करते हैं और जो कुछ बचता है वह सारा सिक्खों को उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दे देते हैं। भाई तारू सिंघ जी अपने सिक्ख होने का कर्त्तव्य पूरा कर रहे थे।

एक सच्चे सिक्ख के लिए अन्य सिक्ख भाइयों, जरूरतमन्दों की आवश्यकतायें पूरी करना प्राथमिकता रखती हैं। उनके सापेक्ष वह अपनी आवश्यकताओं को पीछे रखता है। स्वयं कष्ट, दुख, अभाव में रह कर भी वह दूसरों के हित के लिए तत्पर रहता है। यह उसके अंतर की निर्मलता का प्रतीक है। ऐसा वह अपने अंतर की भावना से करता है, किसी लोभ, दबाव अथवा नीति के अंतर्गत नहीं। ऐसा करते हुए सिक्ख के सामने सदैव श्री गुरु तेग बहादर साहिब की प्रेरणा रहती है, जिन्होंने कश्मीर के ब्राह्मणों की पीड़ा दूर करने हेतु अपना शीश बलिदान कर दिया था। भाई तारू सिंघ जी को इतना ज्ञान तो था ही कि एक न एक दिन जकरिया खान को उनकी गतिविधियों का पता चल ही जायेगा, किन्तु वे तिल-मात्र भी भयभीत नहीं थे। भाई साहिब सहज भाव से यथाशक्ति सिक्खों की आवश्यकतायें पूरी करने में पूरा ध्यान लगा रहे थे। सिक्ख कौम के प्रति इनका सेवा-भाव व समर्पण अद्‌भुत था।

जकरिया खान के पास हरभगत निरंजनिये ने जब गांव मीरांकोट के भाई महिताब सिंघ व गांव पूहला के भाई तारू सिंघ जी के बारे में भारी शिकायतें कीं तो जकरिया खान रोष से भर उठा। उसने भाई महिताब सिंघ को गिरफ्तार कर लाने के लिए फौज व भाई तारू सिंघ को पकड़ कर लाने के लिए बीस सैनिकों का एक जत्था भेजा। मुगल सिपाही जब भाई तारू सिंघ जी को गिरफ्तार करने गांव पूहला गये तो वे तनिक भी विचलित नहीं हुए। जब उन्हें निकट के गांव पढाणा लाया गया तो वहां के निवासी उद्वेलित हो उठे। उन लोगों ने विचार किया कि भले ही भाई तारू सिंघ जी को गांव पूहला से गिरफ्तार कर लिया गया है किन्तु अब जब उन्हें यहां लाया गया है तो हमारा कर्त्तव्य बनता है कि उनका साथ दें। भाई तारू सिंघ जी के साथ उनकी बहन को भी सिपाही पकड़ लाये थे। भाई रतन सिंघ (भंगू) के वर्णन के अनुसार गांव पढाणा के लोगों ने मुगल सिपाहियों को कुछ लालच देकर भाई तारू सिंघ जी से भेंट की और कहा कि हम आपको मुक्त कराने के लिए पूरी तरह से तैयार होकर आये हैं। सिपाहियों को मार देंगे और पूरा गांव उजाड़ कर भाग जायेंगे। इसके पहले गांव के लोग भाई तारू सिंघ जी की बहन को अपने बल से छुड़वा चुके थे। भाई तारू सिंघ जी ने बड़ी दृढ़ता से उनकी योजना को मानने से इन्कार कर दिया और साफ कहा कि वे मृत्यु के डर से भागने को

तैयार नहीं हैं। हमारे गुरुओं ने अपने कुल बलिदान कर दिये थे। हम उन गुरुओं के सिक्ख हैं, भाग कैसे जायें? यह भाई तारू सिंघ जी के चरित्र की कड़ी परीक्षा थी, जिसमें वे पूरे खरे उतरे :

तारू सिंघ उतर दयो, ''सतिगुर मुखों फ्रमाइ।
सो फुरमायो किम मिटै,
लिखयो गयो दरगाहि ॥४५॥
सिक्खन कारन सतिगुरू,
दीने सीस लगाइ।
सो सिख हम उस गुरू के,
किम राखैं सीस बचाइ''॥४६॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ३४९)

गुरु साहिबान की महानता है कि उन्होंने अपने व्यवहार से त्याग व उपकार के ऊंचे आदर्श स्थापित किये और सिक्खों को ऐसा बल व बुद्धि प्रदान की कि वे उन आदर्शों पर चल सकें। सिक्ख वही है जो अपने गुरु के बताये मार्ग पर चले और बिना किसी दुविधा के सिक्खी सिद्धांतों की समझ रखता हो। गुरु साहिबान ने गुरु व सिक्ख के बीच का अंतर मिटा दिया था, जिससे सिक्ख को परिस्थितियों से निपटने का सहज बल प्राप्त हुआ था। ऐसे में परमात्मा स्वयं सहाई होता है। परमात्मा सदैव भाई तारू सिंघ जी के अंग-संग था। गांववासी भाई जी के वचन सुन कर विस्मित रह गये और उनकी सराहना करने लगे। ज्ञानी दित्त सिंघ ने लिखा है कि गांव के लोग हर्ष से भर उठे :

जद इह बचन दलेरी वाले,
तारू सिंघ सुनाए।
तद ही सिंघ नगर दे सुनके,
मन अंदर हरखाए।
लग्गे कहन धंनय हैं पिआरे,
तूं गुर जी दा पिआरा।
ऐसे कशट समें विच जिस ने,
रखिआ जीउ करारा।

(भाई तारू सिंघ दी शहीदी)

भाई तारू सिंघ जी ने अपने वचन पूरे कर फतिह बुलाई और सिपाही उन्हें लेकर आगे प्रस्थान कर गये। उनका संकल्प इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया। किन्तु बड़ी और कठोरतम परीक्षा तो अभी बाकी थी। भाई तारू सिंघ जी को लेकर सिपाही लाहौर पहुंचे तो जकरिया खान को इसकी सूचना दी गई। जकरिया खान ने भाई तारू सिंघ जी को अविलंब दरबार में पेश करने का हुक्म दिया। वह उस सिंघ को देखने को उत्सुक था जिसे उसकी ताकत का तनिक भी खौफ नहीं था और जो उसकी आज्ञा के विरुद्ध जाकर सिक्खों की दिन-रात मदद कर रहा था। भाई तारू सिंघ जी को जब जकरिया खान के सामने पेश किया गया तो उन्हें झुक कर सलाम करने और जान बचाने के लिये विनम्रता से बात करने की सलाह दी गई। भाई तारू सिंघ जी ने बड़ी निर्भीकता से उत्तर दिया कि

''उनका शीश मात्र अपने गुरु के चरणों में ही झुकता है। जहां तक जीवन की बात है, जन्म व मृत्यु परमात्मा के हाथ में है।'' जकरिया खान यह सुन कर हैरान रह गया। जकरिया खान ने भाई जी से पूछा कि ''वे क्यों ऐसे लोगों की मदद करते हैं जो बादशाह के दुश्मन व प्रजा के वैरी हैं?'' भाई तारू सिंघ जी ने कहा कि ''वे सच्चे सूरमे व प्रजा का भला चाहने वाले लोग हैं। वे मेरे घर आते हैं और मैं उन्हें भोजन छकाता हूं। इसमें बुराई क्या है? वे मेरे भाई हैं।''जकरिया खान यह सुन कर उत्तेजित हो उठा और अहंकार में बोला कि ''क्या आप उन जंगल-वासियों को शाही फरमान से बड़ा समझते हैं? आपने राज से द्रोह किया। इसकी कड़ी सजा मिलनी चाहिए। फिर भी बचना है तो इस्लाम स्वीकार कर लो। जान भी बच जायेगी और मनचाही वस्तुएं भी प्राप्त होंगी।'' जकरिया खान के सारे प्रलोभनों को नकारते हुए भाई तारू सिंघ जी ने निर्भीकता से उत्तर दिया कि ''उन्होंने तो अपनी जान अपने गुरु को पहले ही न्यौछावर कर रखी है। इसके बदले उन्होंने सच्ची जीवन-शक्ति व मुक्ति प्राप्त कर ली है। मौत कभी न कभी तो आनी ही है, फिर अपने मस्तक पर धर्म-परिवर्तन का कलंक क्यों लगाऊं? हमारे गुरुओं ने महान बलिदान दिये और संसार से यश अर्जित करके गये हैं। मेरा विश्वास उनमें है। मैं कैसे अधर्म कमा सकता हूं?'' भाई तारू सिंघ जी की बातें सुन कर जकरिया खान क्रोधित हो उठा। उसने कहा कि ''मेरे बल के आगे आप शीघ्र नरम पड़ जाओगे अन्यथा मछली की तरह तड़प-तड़प कर मरोगे।''

ज्ञानी दित्त सिंघ ने अपनी पुस्तक में विस्तार से संवादों के आदान-प्रदान का वर्णन किया है जिसका सार यह है कि जकरिया खान भाई तारू सिंघ जी को भयभीत करने के पुरजोर यत्न करता रहा, जबकि भाई साहिब सिक्खी पर अडिग रहे और तनिक भी विचलित नहीं हुए। भाई साहिब ने जकरिया खान की शक्ति को नकारते हुए कहा :

पर जो लोग धरम दे पिआरे
अर गुर दे सरधालू।
सो न डरदे एस जुलम तों,
जिन ते उह क्रिपालू।

(भाई तारू सिंघ दी शहीदी)

भाई तारू सिंघ जी भाई मनी सिंघ जी के जत्थे से अमृत-पान कर सिंघ सजे थे और वे व्यक्तिगत रूप से भाई मनी सिंघ जी से बहुत प्रभावित थे। भाई तारू सिंघ जी में सिक्खी की परिपक्वता व साहस का यह भी एक बड़ा कारण था। इससे जकरिया खान व उसके दरबारी अचंभित थे। जकरिया खान जानता था कि हर सिक्ख को अपने केश प्रिय होते हैं। उसने नाई को बुला कर भाई साहिब के केश काटने का हुक्म दे दिया। नाई ने बड़े यत्न

किये किन्तु भाई साहिब के केश काटने का साहस न जुटा सका :

लगा उतारन केस जदों,
उह नाई कैंची लै के।
उतारन मूल ना देंदा सिदकी,
नाम गुरु दा लै के।
जिन्ना जोर सभे मिल लाउण,
पर ना काबू रल्हे।
नाल सूरमे दे उह सारे,
घुलन अखाड़ा मल्हे।

(भाई तारू सिंघ दी शहीदी)

नाई जहां भाई तारू सिंघ जी के आगे साहसहीन था और उसके हाथ कांप रहे थे वहीं वो जकरिया खान के खौफ से थरथरा रहा था। खिसियाये जकरिया खान ने भाई जी की खोपरी ही उतार देने का हुक्म दे दिया :

तब नवाब बहु क्रोधहि भरा।
सोऊ हुकम उन मोचीअन करा॥१८॥
''इस की खोपरी साथे बाल।
काट उतारो रंबी नाल।''

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ३७१)

जहां जकरिया खान क्रोध में जलते हुए निर्मम हो रहा था वहीं भाई तारू सिंघ जी प्रसन्न हो रहे थे कि वे सिक्खी को केशों-शवासों संग निभा चले हैं। भाई जी के सिर पर खुर्पी चलनी शुरू हुई तो भाई साहिब अडोल, शांत बैठे रहे, जबकि सुन कर ही लोगों के मुख से चीखें निकल गई थीं। यह अकल्पनीय दृश्य रहा होगा। बर्बरता और धर्म दोनों की पराकाष्ठा थी। संसार देख रहा था कि क्रूरता कहां तक गिर सकती है और धर्म कितनी ऊँचाइयाँ छू सकता है :

सिंघ जी मुखों हाइ न करै।
गुरू गुरू मुख ते सो ररै।
सीस रकत सों करै शनान।
जिउं गंगा में टुभी लान॥२६॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ३७२)

भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी की खाल केशों सहित उतार लेने से रक्त की धारायें बह निकलीं। उनके मुख से किसी चीत्कार के स्थान पर वाहिगुरू-वाहिगुरू निकल रहा था। कहते हैं कि यह निर्मम एवं निष्ठुर कृत्य करने के बाद जकरिया खान का पेशाब आना बंद हो गया। बहुत उपचार किये, किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। पीर, मौलवी भी हार गये। जकरिया खान का कष्ट बढ़ता ही जा रहा था। वह बेहाल था। इसी कष्ट में वह तड़प-तड़प कर मर गया।

इसके कुछ दिनों बाद भाई तारू सिंघ जी शहीद हो गए। साहस के पराक्रमी, पुरुषार्थी, अडिग मन:वस्था के धारक, दशमेश पिता के स्नेही सिंघ भाई तारू सिंघ जी का जीवन सिक्खी के कई रंग प्रकट कर गया, जो युगों-युगों तक प्रेरणा देते रहेंगे।

श्री अकाल तख़्त साहिब : सिक्ख पंथ का राजनीतिक एवं आध्यात्मिक केंद्र

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का बलिदान सिक्ख इतिहास का एक ऐसा महत्वपूर्ण मोड़ है जहां से सिक्ख विचारधारा की कार्यशैली ही बदल गई। बलिदान से पहले पंचम पातशाह ने अपने ग्यारह वर्षीय इकलौते सुपुत्र श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गुरुआई प्रदान की और समझाया कि अब सत्य और मानवता की रक्षा के लिए स्वयं भी शस्त्रधारी बनना और सिक्खों को भी शस्त्र धारण करवाना।

सिक्खों को शस्त्रधारी बनाना : गुरु-पिता के बलिदान के बाद मात्र ग्यारह वर्ष की आयु में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सिक्खों का नेतृत्व संभाला। अत्याचारियों से संघर्ष करने के लिए छठम पातशाह ने सिक्खों को शस्त्रधारी बनाने का कार्य आरंभ किया। गुरुआई पर विराजमान होते ही गुरु जी ने दो कृपाणें धारण कीं— एक 'मीरी' अर्थात् राजनीतिक शक्ति की और दूसरी 'पीरी' अर्थात् आध्यात्मिक शक्ति की। गुरु जी ने सिक्खों को संदेश दिया कि वे उच्च आध्यात्मिक मूल्य धारण करने के साथ-साथ शारीरिक और राजनीतिक शक्ति भी प्राप्त करें। गुरु जी ने सभी सिक्खों को शस्त्रधारी बनने की आज्ञा दी और फ़रमाया कि अब अत्याचारियों का मुकाबला शस्त्र के बिना नहीं हो सकता।

छठम पातशाह के आदेशानुसार सिक्खों को सैनिक प्रशिक्षण दिया जाने लगा। उन्हें घुड़सवारी, तीरंदाज़ी, नेज़ेबाज़ी, तेग चलाने आदि का अभ्यास कराया जाने लगा। शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिए मल्ल-अखाड़ों को और भी प्रफुल्लित किया जाने लगा। कवि और ढाडी-जन वीर-रसात्मक कविताओं एवं वारों के माध्यम से सिक्खों के मन में उत्साह का संचार करने लगे। गुरु जी ने संगत से भी कहा कि अब वे भेंट में अन्य वस्तुओं के साथ-साथ तेग, घोड़े, बरछे आदि जंगी साजो-सामान भी लेकर आया करें और साथ ही जवानियां भी भेंट की जाएं अर्थात् जुल्म व जुल्मी के विरुद्ध गठित की जा रही सेना के लिए नौजवान खुद को भी अर्पित करें।

इस प्रकार बहुत ही अल्प अवधि में एक शक्तिशाली सिक्ख सेना तैयार हो गई। गुरु जी

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

ने श्री अमृतसर साहिब में एक किले 'लोहगढ़' का निर्माण भी कराया। इन सब प्रयासों से सिक्खों की राजनीतिक शक्ति में अद्भुत रूप से वृद्धि होती चली गई।

श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना : छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सिक्खों की राजनीतिक संप्रभुता को स्थापित करने के लिए जो सबसे बड़ा कार्य किया, वह था श्री हरिमंदर साहिब के सामने श्री अकाल तख्त साहिब (अकाल बुंगे) की स्थापना करना। मुग़ल बादशाह जहांगीर का हुक्म था कि कोई भी व्यक्ति अपना निजी चबूतरा २ फुट से ऊंचा नहीं बनवा सकता, परंतु छठम पातशाह ने शाही हुक्म को नकारते हुए १२ फुट ऊंचे तख़्त का निर्माण कराया। बादशाह के तख़्त के मुकाबले यह अधिक ऊंचा था। छठम पातशाह ने फरमान किया कि यह तख़्त सदा के लिए अटल रहेगा।

श्री अकाल तख़्त साहिब के निर्माण के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसे छठम पातशाह ने अपने हाथों से तैयार किया। भाई गुरदास जी गारा बनाकर लाते, गुरु जी ईंटें लाते और बाबा बुड्ढा जी चिनाई का काम करते जाते।

सिक्खों का सर्वोच्च न्यायालय : श्री अकाल तख़्त साहिब का निर्माण संपूर्ण हो जाने के पश्चात यहां छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का दरबार सुशोभित होने लगा। गुरु जी अमृत वेले (बेला में) उठकर स्नान करके नाम-सिमरन करते। प्रभात में गुरु जी राजसी वस्त्र धारण करते, शस्त्र सजाकर घर से बाहर निकलते, श्री हरिमंदर साहिब में माथा टेकते, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिया में बैठते और अंत में श्री अकाल तख़्त साहिब में सुशोभित सिंहासन पर आ विराजते।

यहां पहले भाई सत्ता जी और बलवंड जी 'आसा की वार' का गायन करते। फिर वीर-रसात्मक वारों का गायन किया जाता। फिर छठम पातशाह सिक्खों को धर्म का उपदेश देते। इसके बाद गुरु जी दूर-दूर से आये सिक्खों और अन्य लोगों के विवादों का निपटारा करते। सारा समाज गुरु जी के न्याय का कायल हो गया। लोगों ने अपनी समस्याओं को लेकर लाहौर और दिल्ली दरबार जाना छोड़ दिया। वे श्री अकाल तख़्त साहिब पर गुरु जी के दरबार में आते और छठम पातशाह के फ़ैसलों से संतुष्ट होकर घर लौटते।

इस प्रकार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री अकाल तख़्त साहिब की स्थापना कर सिक्खों को राजनीतिक शक्ति तो प्रदान की ही, साथ ही उन्हें उनका सर्वोच्च केंद्रीय न्यायालय भी प्रदान कर दिया। सिक्खों के समस्त मामलों में श्री अकाल तख़्त साहिब का स्थान सर्वोपरि है

और इसका फ़ैसला सर्वमान्य होता है।

श्री अकाल तख़्त साहिब की सर्वोच्चता : श्री अकाल तख़्त साहिब को छठम पातशाह ने इसी लिए श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिब के सामने बनवाया था ताकि राजनीति पर धर्म का नियंत्रण सदैव बना रहे। सत्ता के नशे में चूर होकर अक्सर सियासी लोग धर्म के अभाव में विकारों में लिप्त हो जाते हैं। गुरु जी ने सिक्खों को राजनीतिक ताक़त प्रदान करते समय ही इस रोग से बचे रहने का प्रबंध भी कर दिया था। छठम पातशाह ने श्री अकाल तख़्त साहिब को जो सर्वोच्च न्यायालय की प्रतिष्ठा प्रदान की, उसके सम्मान की रक्षा बाद के सिंघों और जत्थेदारों ने प्राण-प्रण से की।

श्री अकाल तख़्त साहिब कोई आम दुनियावी कचहरी नहीं है। यह अकाल पुरख का न्यायालय है जहां धर्म की मर्यादा से विचलित हुए लोग संगत के सम्मुख अपनी भूलें तथा ग़लतियां बख़्शवाते हैं और जोड़ों की सेवा एवं लंगर की सेवा जैसे सेवा-कार्य करके अपने मन में पनप उठे अहंकार को विनम्रता के द्वारा नष्ट करते हैं। अकाल पुरख के सामने सब बराबर हैं, चाहे कोई आम आदमी हो, चाहे राजा-महाराजा। इस संदर्भ में अकाली फूला सिंघ और महाराजा रणजीत सिंघ का प्रसंग बहुत महत्वपूर्ण है।

अकाली फूला सिंघ व महाराजा रणजीत सिंघ का प्रसंग : महाराजा रणजीत सिंघ के शासन-काल में अकाली फूला सिंघ श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार थे। आपने मोरां बेगम के मामले में महाराजा रणजीत सिंघ को श्री अकाल तख़्त साहिब पर हाज़िर होकर अपराध बख़्शवाने का आदेश दिया। महाराजा सामान्य वेश में पैदल चलकर श्री अकाल तख़्त साहिब पर हाज़िर हुए। संगत के सामने मोरां बेगम (नर्तकी) के साथ अपने संबंधों को स्वीकार किया और अपने अपराध के लिए क्षमा-याचना की। अकाली फूला सिंघ ने महाराजा को जोड़ों और लंगर की सेवा करने की सज़ा सुनाई। महाराजा ने विनम्रतापूर्वक इस आदेश को स्वीकार किया।

इस प्रकार अकाली फूला सिंघ एवं महाराजा रणजीत सिंघ ने श्री अकाल तख़्त साहिब के पंथ को दिशा-निर्देश देने व इसके आगे शीश झुकाकर दिशा-निर्देश मानने वाले सर्वोच्च न्यायालय वाले इस रुतबे को बरक़रार रखा।

मीरी-पीरी : व्यवहारिक जीवन का आधार

-सतविंदर सिंघ फूलपुर*

मीरी-पीरी मानवीय शख्सियत की संपूर्णता का प्रतीक है। यह धर्म की व्यापकता का आधार है। यह आदर्श राजनीति, स्वस्थ समाज और विनम्र शासन का मॉडल है। गुरबाणी में सिद्धांत रूप में इसकी विस्तृत व्याख्या मिलती है और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय इसका प्रत्यक्ष रूप सामने आता है।

अंतरमुखता और बाहरमुखता मानव की दो मानसिक वृत्तियाँ हैं। इन्हें प्रवृत्ति-निवृत्ति, दीन-दुनी, अंजन-निरंजन, योग-भोग आदि संकल्पों के माध्यम से समझा जा सकता है। भारत में इन विपरीत मानसिक वृत्तियों पर आधारित प्रवृत्ति-मार्ग और निवृत्ति-मार्ग प्रचलित रहे हैं। प्रवृत्ति का अर्थ है— मन का सांसारिक पदार्थों की तरफ झुकाव और निवृति का अर्थ है— दुनियावी पदार्थों के प्रति से उपरामता। मानव का इनमें से एक की तरफ झुकाव अपने आप में अधूरा है। इन दोनों मार्गों में एकात्मकता की अनुपस्थिति के कारण प्रवृत्ति मार्ग वाले सांसारिकता में खचित होकर परमार्थ से वंचित रह गए और निवृत्ति मार्ग वाले घर-परिवार त्याग कर समाज के लिए निकम्मे साबित हुए। ये दोनों मार्ग धर्म और समाज की अधोगति का कारण बने। इसलिए जब तक प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों मानसिक वृत्तियों/ दोनों मार्गों के मध्य समानता स्थापित नहीं की जाती, तब तक आदर्श धर्म, आदर्श समाज और आदर्श राजनीति की कल्पना नहीं की जा सकती। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों हठ हैं और वास्तव में धर्म ही वह युक्ति है, वह जीवन-युक्ति है, जो दोनों में एकात्मकता पैदा करती है :

परविरति निरविरति हाठा दोवै
विचि धरमु फिरै रैबारिआ॥ (पन्ना १२८०)

यह एकात्मकता, समानता सहज की अवस्था है, जहाँ *''सहजे ग्रिह महि सहजि उदासी''* वाली स्वस्थ जीवन-युक्ति है। दोनों मार्गों में एकात्मकता वाली यह जीवन-युक्ति ही मानव का लोक-परलोक संवार सकती है। यही राज-योग का तख्त है। इसके राज-योग में एकात्मकता के कारण इसका राज (अनुशासन) ज़ालिम वृत्ति वाला नहीं, बल्कि निर्मल कर्म (सेवा) इसका आदर्श है। इसका योग भांजवादी (उपरामवादी) नहीं। यह तो *''हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति''* वाली स्वस्थ जीवन-युक्ति है। यही मीरी-पीरी का आधार है।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने लोक-परलोक, दीन-दुनी की एकात्मकता को आगे बढ़ाते हुए *''हरि को नामु जपि निरमल करमु''* के सिद्धांत के माध्यम से श्रेष्ठ धर्म की

*संपादक। फोन : ९९१४४-१९४८४

परिभाषा मानवता के सामने पेश की। परमात्मा की भक्ति (पीरी का कर्म) और मानव-कल्याण के कार्य (मीरी का कर्म) एक ही संपूर्ण शख्सियत के गुण हैं। पीर ने धार्मिक कर्म के साथ-साथ मानवता की भलाई के कार्य भी करने हैं। यदि इस मंतव्य-पूर्ति में कोई विघ्न डालने की कोशिश करे तो शस्त्र-शास्त्र के सिद्धांत को अमल में लाते हुए पीर ने कृपाण भी उठानी है। देग के साथ तेग़ का यह सिद्धांत मीरी के रूप में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के समय सिक्खी जीवन के अभिन्न अंग के रूप में सामने आया। दूसरी तरफ़ मीर ने भी हमेशा धर्म की नवाज़िश में रह कर राज-सत्ता को निर्मल कर्म बनाना है।

मीरी-पीरी ने भक्ति-शक्ति के रूप में धार्मिक और राजनीतिक जीवन के दो पहियों की भांति एक-दूसरे के पूरक बन कर चलना है। एक के बिना दूसरा अधूरा है और अधूरे की अनियंत्रिता के कारण जीवन-गति बिगड़ जाती है। भक्ति के बिना शक्ति दोहरा रवैया इख्तियार कर लेती है। मजलूम के सामने यह ज़ालिम बन जाती है और अपने से अत्याचारी के सामने कायर साबित होती है। सदियों का भारतीय इतिहास इसकी उदाहरण रहा है। दूसरी तरफ़ शक्ति के बिना भक्ति भी कायर ही रहती है जो अपना बचाव खुद करने के योग्य भी नहीं रहती। मीरी-पीरी में आपसी संतुलन न होने के कारण इनके द्वारा एक-दूसरे के अधिकार- क्षेत्र में अनावश्यक दख़लंदाज़ी ने भी धार्मिक एवं सामाजिक जीवन को प्रभावित किया है। इतिहास इस बात का गवाह है कि तथाकथित पीर ने धर्म के प्रकोप का भय देकर मीर के अधिकार-क्षेत्र में अनावश्यक हस्तक्षेप किया है और मीर ने भी अपनी हुकूमत के नशे में पीर को (विशेषत: दूसरे धर्म के धार्मिक नेताओं को) बहुत प्रताड़ित किया हैं। एक ही धर्म में कई बार मीर और पीर दोनों ने मिल कर लोगों पर असीम ज़ुल्म ढाए हैं। मुग़ल काल में काज़ी (पीर) को बादशाह (मीर) ने अपने दरबार में संरक्षण इसलिए दिए रखा, ताकि काज़ी के फ़तवे से बादशाह के ज़ुल्म को धार्मिक रंगत देकर बादशाह ज़ुल्म के पाप से पाकीज़गी के पर्दे में रह सके। यही कार्य क्षत्रिय राज के शासन दरबार में ब्राह्मण करता रहा है।

ऐसी दशा में गुरमति का मीरी-पीरी के सुमेल का मार्ग भारतीय समाज के लिए रोशनी-मीनार साबित हुआ। इसकी भक्ति *''अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई''* वाली कायर भक्ति नहीं। यह दिशाहीन भक्ति की तरह मुक्ति-प्राप्ति के लिए आरे से सिर कटवाने की अपेक्षा धर्म की रक्षा के लिए शीश कटवाने का आदर्श प्रस्तुत करती है। इसकी शक्ति तेग से ज़ालिम का रुख मोड़ना जानती है। यह ज़ालिम हमलावर को देख कर *''कोटी हू पीर वरजि रहाए''* वाली कायरता की समर्थक नहीं। भक्ति में से उत्पन्न इसकी शक्ति *''अति ही रन मै तब जूझ मरो''* का जज़्बा पैदा करती है। इस प्रकार मीरी-पीरी के सिद्धांत ने मानव के व्यक्तिगत और संस्थागत दोनों रूपों में नेतृत्व करना है। धर्म और राजनीति के सम्बन्ध में यदि राजनीति धर्म को अपने हित में इस्तेमाल करने की कोशिश करेगी या धर्म राजनीति की अधीनता स्वीकार कर लेगा तो मीरी-पीरी के सिद्धांत की घोर उल्लंघना होगी।

आज के समय में धर्म और राजनीति के

सम्बन्ध में मीरी-पीरी का संकल्प ही रचनात्मक दिशा देने के योग्य है। आज लोकतंत्र के युग में बहुधर्मी देशों में अल्पसंख्यक लोगों के धर्म के पैरोकार असुरक्षित हैं। 'बेगानी राज-सत्ता' में दूसरे धर्म के पैरोकारों को बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उनके गले में टायर डाल कर उन्हें जिंदा जलाया जाता है। उनके धर्म-स्थानों को तोपों व टैंकों से उड़ाया जाता है। ऐसी दशा में धर्म की अपनी राज-सत्ता की अहमियत महसूस होती है, क्योंकि धर्म की सुरक्षा के लिए राज रूपी बाड़ का होना लाज़िमी है। (इस विचार को बुद्ध धर्म के अनुयायियों के भारत में से देश-निकाले और यहूदियों की हज़ारों वर्ष की पतनोन्मुखी दशा के ऐतिहासिक हवालों के माध्यम से समझा जा सकता है।) इसी दूरंदेशी के अंतर्गत श्री गुरु हरिगोबिंद पातशाह ने मीरी पीरी को बांध कर (इक्ट्ठा करके) नानक-राज के पातशाही दावे हलतमुखी प्रभुता को स्पष्ट कर दिया था। यही खालसा-राज की उमंग है। धर्म और राजनीति के मध्य समानता ही लोकतंत्र का आदर्श हो सकता है। धर्म और राजनीति में समानता होने के बावजूद इन दोनों के अधिकार-क्षेत्र अलग-अलग हैं। राजनीति ने धर्म के योग्य नेतृत्व में कार्यशील रहना है। विद्वानों के अनुसार दार्शनिक स्तर पर मीरी रजो, तमो, सतो— तीनों गुणों तक सीमित है। रजो, तमो गुणों की बहुलता वाली मीरी की पूरे विश्व पर शासन करने की लालसा ने मानवता को बड़े भयानक दुख दिए हैं। इसी लालच के कारण ही दुनिया ने दो विश्व-युद्धों का संताप भोगा है। यदि रजो, तमो के साथ सतो गुण भी मौजूद हो तो मीरी में कुछ शान्ति, दया, दान, क्षमा आदि सद्गुण जागते हैं। पीरी चौथे पद का गुण है, जिसे सहज अवस्था कहते हैं। पीरी के नेतृत्व में मीरी के तीनों गुण संतुलन में आ जाते हैं। इस प्रकार रूहानी, सदाचारक और भौतिक एकात्मकता में से मानव-समानता, परोपकार, समाज-सेवा, दया, इन्साफ आदि गुणों वाले विनम्र शासन का स्वप्न साकार होता है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने कृपाणों को मीरी-पीरी के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल कर दुनिया के इतिहास में पहली बार संत-सिपाही के विलक्षण स्वरूप को प्रत्यक्ष रूप में प्रकट किया है।

इस धरती पर मानव-शख्सियत की संरचना मीरी-पीरी के धारक होकर ही संपूर्ण होनी थी, इसलिए पूर्व गुरु साहिबान ने मीरी-पीरी को सिद्धांत रूप में सिक्खी जीवन का अंग बनाया। फिर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने खुद मीरी-पीरी की दो कृपाणें बांध कर अर्थात् मीरी पीरी को इक्ट्ठा कर इस सिद्धांत को व्यवहारिक रूप में प्रकट किया और सिक्खों को शस्त्रधारी बनाया। अंत में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मीरी-पीरी को द्विधारी, खंडे का रूप देकर, खंडे-बाटे की पाहुल छका कर, खालसा पंथ सजा कर, ख़ालसे को मीरी-पीरी का धारक बना कर धरती का संपूर्ण मानव बना दिया।

सहायक पुस्तकः

Miri Piri- The Cosmic Concept of Balanced way of Life, S.S. Narang.

सिक्ख पहचान में निशान साहिब का महत्व

*- डॉ. परमवीर सिंघ**

निशान साहिब सिक्ख पहचान का महत्वपूर्ण अंग है, जो कि प्रत्येक गुरुद्वारा साहिब में सुशोभित होता है। सिक्ख परंपरा में 'निशान' शब्द कई रूपों में इस्तेमाल किया जाता है परन्तु इसे 'झंडा' या 'ध्वज' के रूप में प्रमुख रूप से देखा जाता है। कुछ गुरुधाम भी झंडा साहिब नाम पर मौजूद हैं, जैसे— गुरुद्वारा झंडा साहिब पातशाही दसवीं, झंडा कलाँ; गुरुद्वारा झंडा साहिब पातशाही छठी, चक्क प्रेमा, फगवाड़ा; गुरुद्वारा झंडा साहिब, पडिआला आदि। रोज़ाना की अरदास में "श्री अमृतसर जी के स्नान, चौकियाँ, झंडे, बुंगे युगो युग अटल" की भावना इसके महत्व के प्रति दृढ़ता प्रदान करती है। नगर कीर्तन में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पालकी के आगे पांच सिंघ निशान साहिब लेकर चलते हैं।

सिक्ख परंपरा में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी से निशान साहिब की परंपरा देखने को मिलती है, जिन्होंने श्री अकाल तख़्त साहिब के निर्माण के पश्चात इसके ऊपर निशान साहिब स्थापित किया था। पवित्रता और स्वाभिमान का यह चिह्न एक लंबे पोल पर लगाया जाता है, जिसके शिखर पर सर्वलोह का भाला या खंडा लगा होता है। कई बार यह गुरुद्वारा साहिब के गुंबद पर भी सुशोभित होता है। त्रिकोण आकार के इसके फरहरे में अक्सर खंडा और चक्र का निशान बना होता है। जंगों-युद्धों के अवसर पर इस्तेमाल किए जाने वाले निशान साहिब पर शस्त्रों के चिह्न भी मौजूद होते थे। मर्यादापूर्वक प्रत्येक गुरुधाम में स्थापित किया जाने वाला यह निशान साहिब प्राय: बसंती रंग का होता है। निहंग सिंघों द्वारा निशान साहिब के लिए नीला रंग इस्तेमाल किया जाता है।

वैसाखी के अवसर पर प्राय: नया निशान साहिब चढ़ाया जाता है, मगर कई बार किसी विशेष दिवस पर भी यह सेवा की जाती है। धार्मिक समागम, कैंप या जोड़-मेल के स्थान पर भी विधिपूर्वक निशान साहिब झुलाने के साथ-साथ इसे सलामी दी जाती रही है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने जीवन में लगभग १४ बड़े युद्ध किए और प्रत्येक में सफलता प्राप्त की। जंगों-युद्धों के समय निशान साहिब गुरु जी के साथ ले जाया जाता था। श्री अनंदपुर साहिब के एक युद्ध की घटना में निशान साहिब के महत्व का विवरण देते हुए 'गुरू कीआं साखीआं' में बताया गया है कि "सतिगुरां का हुकमि पाइ मान सिंघ निशानची ने आगे होइ भूमी में झंडा गाड के जंम के लड़ाई लड़ी। मान सिंघ निशानची ज़ख़्मी होइ गिआ ते निशान दुश्मन के वार से टूट के भोइ गिर पिआ। इस घटना की ख़बर किसे सिक्ख ने तख़्त श्री केसगढ़ में आइ दई। गुरू जी ने उसी वक्त बड़ी दसतार को उतार नीचे केसगी में से नीले रंग का फर्रा निकाल के बचन कीआ, इह खालसाई निशान कभी आगे से टूटेगा नहीं।" यहीं से ही निहंग सिंघों में दुमाले के साथ फरहरा सजाने की

**प्रमुख, सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला—१४७००२, फोन : ९८७२०-७४३२२*

परंपरा भी आरंभ हुई बतायी जाती है। जंगों-युद्धों के समय निशान के रूप में सामने आया यह फरहरा इनमें स्थायी रूप धारण कर गया है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बाद बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने जीते गए किलों पर निशान साहिब स्थापित किया। प्रत्येक युद्ध के अवसर पर यह निशान साहिब बाबा जी के साथ ले जाया जाता था। सरहिंद को जीत कर वज़ीर ख़ान के किले पर निशान साहिब झुलाया गया था। इसकी याद में प्रत्येक वर्ष 'सरहिंद फतह दिवस' मनाया जाता है। अठारहवीं सदी के संघर्ष के समय सिक्ख १२ मिसलों में बँट गए थे। इनमें से एक विशेष 'निशानां वाली मिसल' भी सामने आई, जिसका नेता सरदार दसौंधा सिंघ था। श्री अमृतसर साहिब में इस मिसल की छावनी थी, जो कि श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की सुरक्षा करने के लिए हमेशा यत्नशील रहती थी। इस मिसल से सम्बन्धित एक निशान साहिब अभी भी शाहबाद में संभाल कर रखा हुआ है, जिसके किसी विशेष दिवस पर संगत को दर्शन करवाए जाते हैं।

श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की परिक्रमा में दो निशान साहिब प्रमुख रूप से सुशोभित हैं और इन्हें मीरी तथा पीरी के सिद्धांत के साथ जोड़ कर देखा जाता है। अठारहवीं सदी में यह स्थान बाहरी हमलावरों के निशाने पर रहा। जब-जब वे यहाँ पर हमला कर इसे मिटाने का यत्न करते, वैसे-वैसे यह स्थान सिक्खों के मन में पवित्र भावना और दृढ़ता का विस्तार करता रहा। अठारहवीं सदी में अति संकटमयी समय में अपना जीवन कुर्बान करके भी सिक्ख इस पवित्र स्थान के दर्शन करने के लिए आते रहे। १७६७ ई. में अहमद शाह दुर्रानी को भगा कर भंगी सरदारों ने लाहौर पर कब्ज़ा कर लिया तो उनका ध्यान क्षेत्रीय प्रबंध करने के साथ-साथ गुरुधामों की सेवा-संभाल करने की तरफ भी गया। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की मर्यादा पुन: बहाल करते हुए सरदार झंडा सिंघ भंगी ने श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब पर निशान साहिब लगाया, जिसे 'अकाल धुजा' (ध्वज) या 'सतिगुरु का निशान' कहा जाता था। इससे लगभग ४० वर्ष पश्चात् उदासी महंतों ने श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में निशान साहिब सुशोभित करने का कार्य किया। महंत संतोख दास और महंत प्रीतम दास देहरादून से साल वृक्ष की एक लम्बी लकड़ी श्री अमृतसर लेकर आए और उन्होंने इसे श्री अकाल तख़्त साहिब के सामने स्थापित कर इस पर निशान साहिब झुलाया था। इसके बाद लोहे के निशान साहिब लगाए जाने लगे और अब आधुनिक तकनीक वाले निशान साहिब गुरुधामों की शोभा बढ़ा रहे हैं।

निशान साहिब लगाने की एक विधिवत् परंपरा एवं मर्यादा है। इसके साथ ही सिक्खों में खालसायी निशानों की परंपरा भी देखने को मिलती है। खालसायी निशान कई रूपों में देखे जा सकते हैं। कई बार निशान साहिब जैसे ही दिखाई देने वाले ये खालसायी निशान कारों, ट्रकों, जीपों, घरों, सिक्ख सभायों आदि में लगाए जाते हैं। विशेष अवसर पर निकाले जाने वाले नगर कीर्तन में बच्चों और आम लोगों के हाथ में भी यह आम देखे जा सकते हैं। आम तौर पर बसंती रंग में तैयार किये जाने वाले इन निशानों पर खंडा भी बना होता है या कई बार ੴ होता है। निशान साहिब और खालसायी निशान गुरु साहिबान के प्रति श्रद्धा, दृढ़ता, स्वाभिमान, सुरक्षा तथा सरबत्त के भले वाली भावना प्रकट करते हैं।

शहीद सरदार ऊधम सिंह

*-एडवोकेट कुलबीर सिंह**

शहीदों की चिताओं पे,
लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पे मिटने वालों का,
बाकी यही निशां होगा।

मानव-हृदय, मानवीय-जज़्बात, मानव-विश्वास को आकर्षित करने वाले ये बोल जिस कवि ने बोले, उसके ख्वाब-ख़्याल में भी नहीं आया होगा कि उसके अपने देश में ही एक ऐसा लासानी शहीद होगा, जिसकी संसार में जागृति पैदा करने वाली कुर्बानी को उसके अपने देश की सरकार ही आधी सदी तक अनदेखा कर रखेगी। कहते हैं कि जिस अंग्रेज शासन में सूरज नहीं डूबता था, उसके एक हेंकड़बाज शासक को सात समुद्र पार उसके अपने ही घर (देश) में जाकर भरे दरबार, दिन-दिहाड़े, भरी सभा में उसी तरह गोली मार कर कत्ल कर दिया हो, जिस तरह भरी सभा में उसने हज़ारों निर्देष लोगों को दिन-दिहाड़े गोलियों से भून दिया था। मानव के कर्म सचमुच तब प्राकृतिक करिश्मा बन जाते हैं, जब वह तन-मन से अपने संकल्प के प्रति ईमानदार हो जाता है।

सरदार ऊधम सिंह एक ऐसा ही दृढ़ इरादे वाला शूरवीर योद्धा था, जो अपने मन में यह बात पक्की ठान चुका था कि एक दिन वह अवश्य जलियां वाला बाग़ के कत्ल-ए-आम का बदला लेगा। सरदार ऊधम सिंह का जन्म २६ दिसंबर, १८९९ ई. में माता नरैण कौर व पिता सरदार टहिल सिंघ के घर हुआ। उसके जन्म के शीघ्र पश्चात् ही उसकी माँ का देहांत हो गया। गरीब पिता के कंधों पर अपने दो बच्चों का पालन-पोषण करने की ज़िम्मेदारी आन पड़ी। सरदार ऊधम सिंघ के पिता साधारण किसान थे, जो रेलवे फाटक पर नौकरी कर घर का गुज़ारा चलाते थे। सरदार ऊधम सिंघ का बचपन का नाम 'शेर सिंघ' था। १९०६ ई. में पिता स. टहिल सिंघ के मन में आया कि वह अपने बच्चों को बंदीछोड़ दिवस पर श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन करवा कर लाए। श्री अमृतसर पहुंच कर स. टहिल सिंघ अचानक बीमार पड़ गया और रामबाग नामक अस्पताल में एक रात गुज़ारने के बाद उसकी मृत्यु हो गई। दोनों भाई यतीम हो गए। दोनों भाइयों को उनके दूर के रिश्तेदार रागी चंचल सिंघ सुनाम ने २४ अक्तूबर, १९०७ ई. को सेंट्रल ख़ालसा यतीमखाना, पुतलीघर, श्री अमृतसर में दाख़िल करवा दिया। यतीमखाने के नियमनुसार प्रातः काल चार बजे उठना, स्नान करना, गुरुद्वारा साहिब जाकर पाठ करना उनका नित्य-कर्म था। अचानक १९१७ ई. में उसके

**कानूनी विभाग, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर। फोन : ९७८०५-१२८२०*

बड़े भाई साधू सिंघ की निमोनिया हो जाने के कारण मृत्यु हो गई। सरदार ऊधम सिंघ अकेला रह गया। ज़िंदगी में उत्पन्न परेशानियों ने उसे मज़बूत हृदय और ऊँचे मनोबल वाला मनुष्य बना दिया। १९१८ ई. में उसने दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली।

जलियां वाला बाग़ का नरसंहार और बदले का प्रण : सर माइकल ओडवायर १८८४ ई. में I.C.S. इम्तिहान पास करने के पश्चात् भारत में विभिन्न पदों पर काम करने के बाद दिसंबर १९१२ ई. में पंजाब का लेफ्टिनेंट गवर्नर नियुक्त हो गया। १९१३ ई. में प्रथम विश्व-युद्ध शुरू होने के बाद अंग्रेज़ सरकार को अधिक से अधिक सैनिकों की ज़रूरत थी, ताकि दुश्मन देशों के ख़िलाफ़ लड़ा जा सके। माइकल ओडवायर ने पंजाब के हज़ारों नौजवानों पर भारी उत्पीड़न कर उन्हें जबरन अंग्रेज़ सेना में भर्ती करवाया। प्रथम विश्व-युद्ध के कारण लंदन में बैठी अंग्रेज़ सरकार द्वारा भारत में काम कर रहे सभी अंग्रेज़ अधिकारियों को यह सख़्त हिदायत थी कि वे भारतीय लोगों के किसी भी तरह के विद्रोह या आंदोलन को सख्ती के साथ दबाएं।

१९१९ ई. में अंग्रेज़ों ने रोल्ट एक्ट (Revolutionary Crimes Act) बना दिया। इस एक्ट के मुताबिक किसी भी व्यक्ति को गिरफ़्तार किया जा सकता था और गिरफ़्तार होने वाले व्यक्ति के पास अपील, दलील और वकील करने का अधिकार भी नहीं था। इस एक्ट का नाम 'रोल्ट एक्ट' इसलिए रखा गया क्योंकि इस एक्ट की रूप-रेखा ब्रिटिश जज जस्टिस रोल्ट ने तैयार की थी। पूरे हिंदुस्तान में इस नादरशाही कानून के ख़िलाफ़ बड़े स्तर पर रोष प्रदर्शन हुए। १३ अप्रैल, १९१९ ई. को वैसाखी का दिन था। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के पवित्र सरोवर में स्नान करने के लिए गाँवों-कसबों से लोग श्री अमृतसर पहुँचे हुए थे। इसी दिन जलियां वाला बाग़ की हदूद के अंदर लोगों के लोकप्रिय नेता डॉ. सत्यपाल और डॉ. किचलू की गिरफ़्तारी के विरुद्ध एक विशाल जलसा था। डॉ. सिकंदर सिंघ के अनुसार जरनल डायर, जो उस समय श्री अमृतसर पुलिस का इंचार्ज था, ५० सिपाहियों की एक टुकड़ी के साथ बाग़ के अंदर दाख़िल हुआ और उसने निहत्थे लोगों पर फायर करने का हुक्म दे दिया। कुछ ही पलों में हज़ारों की संख्या में लोग शहीद कर दिए गए। पूरे भारत में इस कत्ल-ए-आम के ख़िलाफ़ हाहाकार मच गई। उन्हीं दिनों सेंट्रल ख़ालसा यतीमखाना के प्रबंधकों द्वारा कुछ विद्यार्थियों की ड्यूटी जलियां वाला बाग में हुए घायल लोगों की सेवा करने हेतु लगाई गई। सरदार ऊधम सिंघ उनमें से एक था। उसने मौत का यह सारा मंजर अपनी आंखों से देखा। उसी दिन उसने ठान लिया कि वह एक दिन इस कत्ल-ए-आम का बदला अवश्य लेगा।

कुछ समय बाद उसने यतीमखाना छोड़ दिया। उसने क्रांतिकारियों के साथ अपने सम्बन्ध स्थापित कर लिए। १९२८ ई. में सिटी कोतवाल पुलिस श्री अमृतसर द्वारा थानेदार सैयद सरकार

अलीधार के नेतृत्व में उसे गिरफ़्तार किया गया। एफ. आई. आर. संख्या ३२७/१३९ के अंतर्गत उसके ख़िलाफ़ नाजायज हथियार रखने और क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने के तहत केस दर्ज किया गया। इस केस में उसे पाँच वर्ष की सज़ा हुई। १९३३ ई. में सरदार ऊधम सिंघ जेल से रिहा हो गया। १९३३ ई. से लेकर १९४० ई. तक सरदार ऊधम सिंघ अपने मकसद की कामयाबी के लिए नाना प्रकार की योजनाएं बनाता रहा। Times Of Londan के १२ मार्च, १९४० ई. के हवाले के अनुसार उसने पढ़ा कि १३ मार्च को लंदन के कॉकस्टन (Coxton) हाल में एक मीटिंग है, जिसमें जनरल माइकल ओडवायर Genral Michael O Dwyer शामिल होगा। निश्चित दिन शाम साढ़े चार बजे काकस्टन हाल श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ था। स्टेज पर अध्यक्ष कुर्सी पर लॉर्ड जेटलैंड बैठा था, जो किसी समय भारतीय रियासतों का सचिव और बम्बई का गवर्नर रह चुका था। लॉर्ड लमिंगटन, सर लुईस डेक और माइकल ओडवायर मंच पर बैठे वक्ताओं में शामिल थे। लॉर्ड लमिंगटन ने अफगानिस्तान के बारे में अपना लेक्चर दिया। जब माइकल ओडवायर की बारी आई तो उसने बड़े गर्व के साथ अपनी प्राप्तियों का ज़िक्र करना शुरू कर दिया। इस समय सरदार ऊधम सिंघ हॉल में लगी कुर्सियों की चौथी लाईन में खड़ा था। उसका खून खौल उठा। २१ वर्ष कठिन प्रतीक्षा के बाद आज उसका उद्देश्य पूरा होने वाला था। देरी न करते हुए सरदार ऊधम सिंघ ने अपने ओवरकोट में से पिस्तौल निकाल कर ओडवायर की तरफ सीधी गोलियाँ दागनी शुरू कर दीं। पल भर में ओडवायर ज़मीन पर गिर गया। हॉल में ख़ास किस्म का सन्नाटा छा गया। हर तरफ़ हाहाकार मच गई। मौके पर मौजूद सिपाहियों ने सरदार ऊधम सिंघ को गिरफ़्तार कर लिया। इस समय सरदार ऊधम सिंघ ने कहा कि ''देखो मेरा उद्देश्य पूरा हो गया है। मैं भागूंगा नहीं। आपने जो करना है कर लो!'' इस प्रसंग में सरदार करतार सिंघ बलग्गण लिखते हैं :

ऊधम सिंघ सरदार ने मार गोली,
डिठ्ठा जदों मूज़ी हिल्लणो रहि गिआ ए।
लग्गा कहिण कि अणखे पंजाब दीए,
तेरा कर्ज़ मेरे सिर तों लहि गिआ ए।

३१ जुलाई, १९४० ई. को पैटकविले जेल में इस महान व्यक्ति को फांसी पर लटका कर शहीद कर दिया गया। जांबाज शूरवीर योद्धा ने २१ वर्ष तक अपने सीने में संभाले उद्देश्य को पूरा कर भारत की इज्जत लंदन की गलियों में रुलने से बचायी।

सहायक सामग्री :

१. डॉ. सिकंदर सिंघ, कौम का शहीद ऊधम सिंघ, यूनीस्टार पब्लिकेशन।
२. शहीद ऊधम सिंघ के जन्म-दिवस को समर्पित विशेषांक सोवीनर, सेंट्रल ख़ालसा यतीमखाना, श्री अमृतसर।
3. AIR-1940 (All India Reporter), Lahore Asr, Brr Association Library.

वातावरण की अशुद्धता : समस्या और समाधान

– डॉ. इंदरजीत सिंघ 'वासु'*

मानव-प्रकृति का गौरव और विशेष चमत्कार है, जो लाखों वर्षों से प्रकृति के संग सफ़र कर रहा है। व्याकुलता और तलाश की प्राथमिक रुचियों के कारण मानव इसके खज़ानों की खोज के प्रति समर्पित रहा है। आज के युग में पहुँच कर इसने टेक्नॉलॉजी और आर्थिक आधार वाली शहरी सभ्यता को स्थिर कर लिया है। इस समूची प्रक्रिया के दौरान इसके प्रकृति से सम्बन्ध टूट गए हैं। अब मानव ने प्रकृति को पहले की तरह विस्मय का स्रोत नहीं, बल्कि भौतिक ज़रूरतों का स्रोत बना लिया है। जीवन-स्तर के बदलाव ने वस्तुओं की अनेक ज़रूरतें उत्पन्न की, जिनकी पूर्ति के लिए मानव ने वनस्पति और जंगल आदि साफ़ कर वातावरण असंतुलित कर दिया। प्राकृतिक खनिजों से भरपूर धरतियां ताकतवर देशों की ललचाई नज़र का केंद्र बन गईं। परिणामस्वरूप भयानक युद्ध सामने आए और अमृतमयी वातावरण ज़हरी हथियारों के ज़हर से प्रदूषित हो गया। मानव की इन अमानवीय गतिविधियों के कारण अब वातावरण की समस्या उत्पन्न हो गई है, जिससे मानवीय अस्तित्व को ख़तरा पैदा हो गया है। इस समूचे संदर्भ में गुरमति मानव को ब्रह्मांड, जगत, प्रकृति और मानव के प्रति विशेष दृष्टिकोण प्रदान करती है। गुरमति की रौशनी में वातावरण-समस्या के संदर्भ में निम्नलिखित पक्ष सामने आते हैं :—

१. वातावरण की अशुद्धता का मूल स्रोत—निम्न दर्जे की सोच

२. पदार्थक दृष्टिकोण

३. गुरमति का नेतृत्व

(अ) मानवीय प्रकृति का दैवीकरण

(आ) वातावरण के प्रमुख तत्वों के प्रति सकारात्मक दृष्टि

(इ) मानव की सुरक्षा और सम्मान

४. विश्वीकरण के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गुरमति के आदर्श

(अ) विनम्र अनुशासन

(आ) विशुद्ध रहन-सहन

(इ) वातावरण की एकात्मकता

५. सारांश

१. वातावरण की अशुद्धता का मूल स्रोत : वातावरण की अशुद्धता का मूल स्रोत मानव की निम्न दर्जे की सोच है, जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की मानव-कमज़ोरियां जन्म लेती हैं। काम-वाशना

*प्रोफेसर, श्री गुरु अंगद देव इंस्टीट्यूट ऑफ रिलीजियस स्टडीज़, खडूर साहिब (जिला तरनतारन), फोन : ९०५६३-६०७६३

मानव-जीवन में घोर तबाही का कारण बनती है। विशेषत: जब कोई प्रसिद्ध हस्ती इस भावना का दुरुपयोग करती है तो देश स्तर पर राजनीतिक उथल-पुथल सामने आती है। भक्त नामदेव जी ने ''पापी का घर अगने माहि'' कह कर इसके भयानक प्रभाव से मानव को सुचेत किया है। इस संदर्भ में उनके गुरबाणी फरमान इस प्रकार हैं :

— जैसा संगु बिसीअर सिउ है रे
तैसो ही इहु पर ग्रिहु ॥ *(पन्ना ४०३)*
— घर की नारि तिआगै अंधा ॥
पर नारी सिउ घालै धंधा ॥. . .
पापी का घरु अगने माहि ॥
जलत रहै मिटवै कब नाहि ॥ (पन्ना ११६४)

इसी प्रकार आज की दुनिया में ईरान, अफगानिस्तान आदि देशों में अमेरिका द्वारा मचाई तबाही, बगदाद तथा अन्य शहरों में बम-धमाकों से सम्बन्धित एवं न्यूक्लियर हथियारों द्वारा, दरियाओं का पानी ज़हरीला होने के कारण अमेरिका के प्रबल क्रोध को ही प्रकट करते हैं। यह इस प्रकार प्रकट होता है कि आधुनिक मानव फिर कबीलावाद और जंगली सभ्याचार की तरफ लौट रहा है। लोभ की प्रवृत्ति ने दिखावे के रहन-सहन की भावना को बढ़ाया है। इमारतों के निर्माण के लिए लकड़ी का प्रयोग बढ़ा है, जिसके लिए जंगलों की कटाई की जाती है। ज़मीन वस्त्रहीन होने के कारण बारिश के समय भूमि-कटान की समस्या उत्पन्न हुई है। अन्न-उपजाऊ ज़मीन की कमी के कारण अन्न की कमी सामने आई है, जिस कारण कई देशों में दंगे-फ़साद सामने आए हैं।

इसी प्रकार मोह की प्रवृत्ति ने भ्रष्टाचार को बढ़ाया है और आम जनता को टूटे अस्पताल, टूटी सड़कें, टूटी बसें मिलती हैं। उड़ती धूल ने प्रदूषण को बढ़ाया है। अहंकार की प्रवृत्ति ने मानवीय जीवन में अफरा-तफरी बढ़ाई है। इसी भावना के अधीन ताकतवर मुल्कों ने गरीब मुल्कों के आर्थिक साधनों की लूट मचायी है। गुरबाणी ने इन पाँच तृष्णाओं की मानव के आंतरिक गुणों को लूटने वाले पाँच चोरों के साथ तुलना की है और मानवीय वातावरण की सुरक्षा के लिए इनसे सुचेत रहने के लिए कहा है :

एक नगरी पंच चोर बसीअले
बरजत चोरी धावै ॥
त्रिहदस माल रखै जो नानक
मोख मुकति सो पावै ॥ *(पन्ना ५०३)*

२. पदार्थक दृष्टिकोण : उपरोक्त कर्मादिक भावनाओं ने मानव के जीवन-दृष्टिकोण को मात्र पदार्थों तक सीमित कर दिया है, जिस कारण यह स्वार्थ की मानव-विरोधी भावना का शिकार हो गया है। इसके पास से ब्रह्मांडीय एकता का संकल्प छिन गया है। यह अलग हस्ती की स्थापना का शिकार हो गया है और इसके-अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। अब मानवीय जीवन में खपतकारी सभ्याचार का प्रवेश हुआ है, जिससे मानव

जीवन-मूल्यों का पतन सामने आ रहा है। मानवीय जीवन में ख़ुदगर्ज़ी, लालच, फ़िज़ूलख़र्ची, दिखावा, दुविधा आदि प्रवृत्तियों का आरंभ हुआ है। मानव वैज्ञानिक प्राप्तियों के साथ-साथ अपनी रूह को विकसित नहीं कर सका। निजी इच्छाओं की पूर्ति के कारण पारिवारिक संस्था तबाह हो रही है। विश्वास की कमी के कारण मानव की रूहानियत डगमगा गई है। मानव-मूल्यों की तोड़फोड़ सामने आई है। उदासी, निराशा, सामाजिक टकराव, शोषण, नफ़रत, वैर और हिंसा आदि दुष्प्रवृत्तियां मानव-जीवन में घर कर रही हैं, जिस कारण उत्तम मानव की सृजना होने की कोई भी संभावना नज़र नहीं आ रही है। संसार जंग का मैदान बन गया है। लड़ाई का नज़ला धरती पर गिर रहा है और धरती व इसकी सुंदर वादियां बमों की भेंट चढ़ रही हैं।

३. गुरमति का नेतृत्व : उपरोक्त गैर-मानवी चक्र को गुरमति आसान बनाने का मार्ग प्रशस्त करती ताकि छिनी हुई वातावरण की शुद्धता मानव को दोबारा मिल सके। इस संबंध में गुरबाणी ने निम्मलिखित कार्य-योजना प्रस्तुत की है :—

(अ) मानवीय प्रकृति का दैवीकरण : गुरमति ने मानव के सामने उसकी प्रकृति का संपूर्ण दृष्टिकोण रखा है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार जहाँ शरीर में विकारों की अग्नि है, वहीं उसमें शांत स्वभाव की वनस्पति भी है। जहाँ उसमें सूरज का तेज़ है, वहीं चंद जैसी शीतलता भी है। जहाँ शरीर काम-क्रोध का नगर है, वहीं यह हरि का महल भी है। श्री गुरु नानक देव जी ने मानव शरीर के संपूर्ण आनंद और ख़ुशहाली के लिए क्रोध को हथियार बनाकर खुशहाल परिसर के गिर्द उत्पन्न विकारों के खरपतवार को उखाड़ बाहर फेंकने का उपदेश दिया है। यह परिवर्तन की प्रक्रिया अथवा समूचा दैवीकरण गुरु के नेतृत्व में ही संभव है। इस सम्बन्ध में गुरबाणी के कुछ फरमान निम्नलिखित हैं :

— कामु क्रोधु दुइ करहु बसोले
गोडहु धरती भाई ॥. . .
भीतरि अगनि बनासपति मउली
सागरु पंडै पाइआ ॥ *(पन्ना ११७१)*
— बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥
जिनि माणस ते देवते कीए
करत न लागी वार ॥ *(पन्ना ४६२)*

(आ) वातावरण के प्रमुख तत्वों के प्रति सकारात्मक दृष्टि : पवन, पानी और धरती वातावरण के प्रमुख तत्व हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने अपने एक फरमान *''पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु''* में तीनों को सम्मानित दर्जा दिया है। पवन, मानसून (पानी) के रूप में धरती पर बरस कर, मानव को उपज के साथ मालामाल कर देती है और गुरु मानव को श्रमकार की जीवन-जाच के साथ-साथ दुनियावी और रूहानी दौलत से भरपूर कर देता है। इसीलिए पवन गुरु है, जिसकी पवित्रता और शुद्धता की तरफ श्री गुरु

नानक देव जी ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है। पानी पिता की भांति मानव का प्रतिपालक है और मानवीय जीवन एवं वनस्पति-जगत पानी पर निर्भर है। पानी के बिना खेती मुरझा जाती है और देश की आर्थिकता डगमगा जाती है। पानी समुद्र का रूप धारण कर व्यापार तथा यातायात के साधन के रूप में देश के अनंत विकास का कारण बनता है। गुरबाणी के निम्नलिखित फरमान पानी की सुरक्षा, पवित्रता एवं शुद्धता की स्थापि के सम्बन्ध में विशेष हैं :

— पहिला पाणी जीउ है
जितु हरिआ सभु कोइ ॥ (पन्ना ४७२)
— जल बिनु साख कुमलावती
उपजहि नाही दाम ॥ (पन्ना १३३)

धरती को श्री गुरु नानक देव जी ने माँ होने का रुतबा दिया है, ताकि मानव इसके प्राकृतिक स्त्रोतों की सुरक्षा के लिए जागरूक हो सके। धरती एक ऐसा महत पदार्थ है, जो अपने माल-धन के साथ मानवीय जीवन को चलायमान रखने के समर्थ है। धरती की कोख में से निकलते नाना प्रकार के खनिज पदार्थ जहाँ उद्योगों का आधार हैं, वहीं मानव की अमीरी एवं शान का भी प्रतीक हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने धरती को 'धरमसाल' कहा है, ताकि मानव इसका इस्तेमाल धर्म कमाने के लिए करे। धरती की कुल लीला नियमबद्ध है। मानव धरती के 'धर्म' अथवा कर्त्तव्य के प्रति सुचेत हो। धरती को कार्यशील करने वाले नियमों पर चलना ही मानव का धर्म अथवा कर्त्तव्य है।

(इ) मानव की सुरक्षा और सम्मान : श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार मानव का शरीर हरि-मंदिर का रुतबा रखता है। परमात्मा ने मानव को अपने जितनी चेतनता देकर संवारा है। मानव के सम्मान में ईश्वर का सम्मान छिपा है। मानवीय शरीर की सुरक्षा को यहूदी चिंतन में सबसे उत्तम स्थान दिया गया है। यह विचारधारा एक मानव के कत्ल को समुच्चय मानवता का कत्ल मानती है, क्योंकि एक मानव के कत्ल के साथ उससे आगे चलने वाली पीढ़ी और समुच्चय नसल का ख़ात्मा हो जाता है। सभी मनुष्यों में रब की हस्ती का एक ही जितना सम्मिलन है। मानवीय रुतबे से सम्बन्धित गुरबाणी के कुछ फरमान हैं :

— अवर जोनि तेरी पनिहारी ॥
इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥ (पन्ना ३७४)
— हरि मंदरु एहु सरीरु है
गिआनि रतनि परगटु होइ ॥ (पन्ना १३४६)
— सभे साझीवाल सदाइनि
तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ (पन्ना ९७)

४. विश्वीकरण के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गुरमति के आदर्श : (अ) विनम्र राज : गुरमति की विश्वव्यापी विचारधारा के साथ विश्वीकरण का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। इस मंज़िल की तरफ पहला कदम विनम्र राज (अनुशासन) का आदर्श है, जो समूचे संसार की सुरक्षा और संभाल पर आधारित है,

जिसकी पहली सूरत समूचे लोगों के दुखों का निवारण है। श्री गुरु अरजन देव जी का कथन इस सम्बन्ध में विशेष है :

हुणि हुकमु होआ मिहरवाण दा ॥
पै कोइ न किसै रञाणदा ॥
सभ सुखाली वुठीआ
इहु होआ हलेमी राजु जीउ ॥ *(पन्ना ७४)*

(आ) विशुद्ध रहन-सहन : विशुद्ध रहन-सहन पर आधारित राष्ट्रीय आचरण की अति आवश्यकता है। राष्ट्रीय आचरण के कारण अमेरिका, कनाडा आदि देशों का शहरी जीवन साफ़-सुथरा है, जबकि भ्रष्टाचार के कारण भारत का वातावरण अशुद्धता का शिकार है। जीवन की पवित्रता के बिना वातावरण की पवित्रता नहीं रखी जा सकती। आंतरिक जीवन की शुद्धता के बिना बाहरी रूप-शृंगार जीवन को व्यर्थ गंवाने के समान है। जीवन की आंतरिक पवित्रता, कर्मों को धरती बना कर, ज्ञान का बीज बोने से प्राप्त होती है, जिसके लिए सत्य के पानी और किसान की आस्था की ज़रूरत होती है, जैसे :

अमलु करि धरती बीजु सबदो करि
सच की आब नित देहि पाणी ॥. . .
माल कै माणै रूप की सोभा
इतु बिधी जनमु गवाइआ ॥ *(पन्ना २४)*

(इ) वातावरण की एकात्मकता : सांसारिक अमन के लिए वातावरण की एकात्मकता मुख्य शर्त है। *''जो ब्रहमंडे सोई पिंडे''* का फरमान मानव को अपने आप की और ब्रह्मांड की एकता के लिए प्रेरित करता है। वातावरण एकात्मकता के लिए पहले पारिवारिक एकात्मकता की ज़रूरत है, जिसके लिए *''माई बाप पुत्र सभि हरि के कीए''* के फरमान से शिक्षा लेनी चाहिए। दूसरी एकात्मकता सामाजिक एकात्मकता है, जिसकी प्राप्ति *''होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई''* के फरमान और अमल करने से हो सकती है। तीसरी एकात्मकता विश्वमयी एकात्मकता है, जो *''पसरिओ आपि होइ अनत तरंग''* के गुरबाणी-फरमान की प्रेरणा है।

सारांश : वातावरण के बचाव के लिए ऐसी शख़्सियतों की ज़रूरत है जो कुदरत में से कादर पहचानने वाली दृष्टि रखती हों और *''बलिहारी कुदरति वसिआ''* के फरमान की प्रेरणा को ग्रहण करें, जो आंतरिक परिवर्तन द्वारा सत्य व सादगी अपना कर, विशाल चेतना की धारक हों, समानता, स्वतंत्रता और न्याय के मानव-मूल्यों की प्रत्येक मनुष्य को गारंटी दें, ताकि युद्ध रुक सकें, शाश्वत अमन स्थापित हो सके और वातावरण की अशुद्धता की समस्या का पूरी तरह से समाधान हो जाए।

कविता

सरदार जी

*-श्री संजय कुंदन**

आएंगे सरदार जी
बहुत सारे सरदार जी
खाना लेकर, पानी लेकर
दवा लेकर आएंगे।
बहुतों के लिए सांस, उम्मीद
और हौसला लेकर आएंगे।

वे बिन बुलाए आएंगे
और किसी से कुछ मांगेगे भी नहीं
उन्हें नहीं चाहिए प्रशंसा और प्रशस्ति-पत्र
वे अपना काम कर चुपचाप चले जाएंगे।

अधिपतियो! सत्ता के दलालो!
तुम उन पर सुनाते रहो चुटकुले
कहते रहो उन्हें गद्दार
वे आते रहेंगे बांहें फैलाए
बाबा फ़रीद की तरह
बाबा नानक की तरह

उनके हृदय में पांच नदियों के जल से भी
ज्यादा करुणा बहती है
वे नफरत के मलबे को हटाकर
निकाल लेंगे थोड़ी-सी जगह कहीं भी

कूटनीतिज्ञो! हथियारों के सौदागरो!
तुम उनका रास्ता नहीं रोक पाओगे
चलता रहेगा लंगर पृथ्वी पर व्यवधानरहित
आते रहेंगे बहुत सारे सरदार जी

जरूरतमंद इंसान के लिए
वे आते रहेंगे।
तुम्हारे ग़रूर व नफरत के सामने
वे मानवता के झंडे
लहराते रहेंगे।

**ए-७०१, जनसत्ता अपार्टमेंट, सेक्टर-९, वसुंधरा, गाजियाबाद— २०१०१२, फोन : ०९९१०२-५७९१५, ०१२०-३२३२६७७*

कविता

कैसे हम इंसान हैं ?

-डॉ. मनजीत कौर*

पवन गुरु है जगत का और
जीवन सबका पानी है।
धरती सबकी माता है,
कहती गुरुओं की बाणी है।
जननी और जन्म-भूमि,
दुनिया में सबसे महान हैं।
धरती को ही प्रदूषित करते,
कैसे हम इंसान हैं?
हरे-भरे जो पेड़ हैं सारे,
धरती का शृंगार हैं।
फल, फूल, छाया देते,
सबका जीवन-आधार हैं।
काट पेड़ों को स्वार्थवश,
करते हम नादानी हैं।
है दुखी हमारी इस प्रवृत्ति से,
यह प्रकृति रानी है।
कल-कल बहती नदियों के,
अमृत को ज़हर बना डाला।
ऑक्सीजन प्राण-वायु को हमने,
कार्बनडाईऑक्साइड बना डाला।
व्यापार औषधि चले धड़ल्ले,
स्वास्थ्य-स्थल हो रहे बदनाम।
पेट भरा न नियत भरी,
रहा न बंदे का दीन-ईमान।
सच कहा है मनीषियों ने,
प्रकृति तेरा दिया ही मोड़ेगी।
विकास जिसे हम समझ बैठे,
वो भ्रम हमारा तोड़ेगी।
उतराव-चढ़ाव बड़े देख चुके,
मारामारी होगी अब पानी पर।
अगर हो गया ऐसा तो,
आफत बनेगी जिंदगानी पर।
उठो, जागो, सुचेत हो जाओ,
फिरो न यूं नादानी में!
बस करो, अब तौबा कर लो,
जहर न घोलो हवा-पानी में!
लगा सको जितने पेड़ लगाओ,
बढ़ाओ खूब हरियाली को!
पानी की भी बचत करें तो,
चारों ओर खुशहाली हो!

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

ख़बरनामा

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने पाकिस्तान में दो सिक्खों का कत्ल किये जाने की सख़्त शब्दों में की निंदा

श्री अमृतसर : १५ मई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने पाकिस्तान के पेशावर में दो सिक्ख दुकानदारों— स. रणजीत सिंघ और स. कुलजीत सिंघ को गोलियाँ मार कर कत्ल किये जाने की सख़्त शब्दों में निंदा की है। एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि पाकिस्तान में पिछले समय के दौरान सिक्खों पर कई बार हमले हो चुके हैं। पिछले साल हकीम सतनाम सिंघ का कत्ल किया गया था और कुछ दिन पहले पाकिस्तान गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व प्रधान के पुत्रों पर भू-माफिया ने हमला किया था। इसी प्रकार अल्पसंख्यकों पर हमले की कई और भी खबरें सामने आ रही हैं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में घट रही ऐसी घटनाओं के कारण अल्पसंख्यकों में भय की भावना पैदा हो रही है, जिसके प्रति सरकार को संजीदा होना चाहिए। एडवोकेट धामी ने कहा कि पाकिस्तान में श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से दुनिया भर में सांझीवालता का संदेश फैला, मगर दुख की बात है कि आज गुरु साहिब के सिक्खों को ही निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सिक्खों का पाकिस्तान के साथ पुराना व पक्का रिश्ता है, क्योंकि पाकिस्तान में सिक्खों के बहुत-से गुरुद्वारे हैं और सिक्ख वहाँ के विकास में भी योगदान देते हैं। उन्होंने पाकिस्तान सरकार से कहा कि इस मसले की तरफ विशेष ध्यान देकर सिक्खों की सुरक्षा को यकीनी बनाया जाए। एडवोकेट धामी ने भारत सरकार से भी अपील की कि वह कूटनीतिक स्तर पर पाकिस्तान सरकार के साथ बात कर सिक्खों की जान-माल की सुरक्षा के लिए उचित कदम उठाए।

जत्थेदार तोता सिंघ के निधन पर की गई शोक सभा

श्री अमृतसर : २२ मई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ सदस्य, प्रसिद्ध अकाली नेता और पंजाब के पूर्व मंत्री जत्थेदार तोता सिंघ के निधन पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी मुख्यालय में शोक सभा आयोजित कर बिछड़ी रूह को श्रद्धाँजलि भेंट की गई। इस दौरान मूल-मंत्र और गुरु-मंत्र का जाप कर अरदास की गई। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने जत्थेदार तोता सिंघ की पंथक सेवाओं को याद करते हुए उनके अकाल प्रस्थान को पंथक क्षति करार दिया। इस दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का मुख्यालय आधे दिन के लिए बंद रखा गया।

फ़ैशन शो के नाम पर सिक्ख ककारों की बेअदबी करने का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने लिया सख़्त नोटिस

श्री अमृतसर : २९ मई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने दिल्ली में एक फ़ैशन शो के दौरान सिक्ख ककारों की बेअदबी करने का नोटिस लेते हुए दोषियों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्यवाही की माँग की है। एडवोकेट धामी ने कहा कि ककार सिक्ख धर्म का अटूट अंग हैं और इन्हें धारण करने की एक मर्यादा है। उन्होंने कहा कि कुछ लोग सिक्ख पहनावे एवं ककारों का गलत प्रयोग कर सिक्खों की धार्मिक भावनाओं को भड़का रहे हैं और सरकारें इन लोगों के ख़िलाफ़ कोई ठोस कार्यवाही नहीं करती। उन्होंने कहा कि वायरल हुई एक वीडियो, जो दिल्ली की बतायी जा रही है, में लड़कियों के सिर पर पगड़ी और ऊपर से कृपाण पहना कर फ़ैशन शो में पेश किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस मामले को लेकर सिक्ख मिशन दिल्ली के इंचार्ज की ड्यूटी लगाई गई है, ताकि मुकम्मल जांच कर दोषियों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्यवाही की जा सके। उन्होंने सरकार को ताड़ना की कि दोषियों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्यवाही की जाये ताकि भविष्य में कोई भी धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ न कर सके।

श्री अकाल तख़्त साहिब पर जून 1984 के शहीदों की याद में हुआ शहीदी समागम

श्री अमृतसर : ६ जून : जून, १९८४ ई. में भारत की कांग्रेस सरकार द्वारा श्री अकाल तख़्त साहिब पर किये गए फ़ौजी हमले के दौरान शहीद हुए संत जरनैल सिंघ ख़ालसा भिंडरांवाला, भाई अमरीक सिंघ, बाबा ठारा सिंघ, जनरल शुबेग सिंघ सहित सभी शहीदों की याद में श्री अकाल तख़्त साहिब पर सालाना शहीदी समागम आयोजित किया गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा करवाए गए इस समागम के अवसर पर श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के पश्चात् अरदास भाई प्रेम सिंघ ने की और हुकमनामा श्री अकाल तख़्त साहिब के हेड ग्रंथी ज्ञानी मलकीत सिंघ ने श्रवण करवाया। समागम में सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ, श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, दल बाबा बिधी चंद संप्रदाय के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ सहित कई प्रमुख शख़्सियतों ने हाज़िरी भरी।

इस अवसर पर श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने सिक्ख कौम को संबोधित करते हुए कहा कि जून, १९८४ ई. का घल्लूघारा सिक्ख कौम पर हुए जुल्मों की दर्द भरी गाथा है, जो भारतीय स्टेट के सिक्ख विरोधी मंसूबों की देन था। उन्होंने कहा कि सन् १९४७ में हुए देश-विभाजन के समय से ही

सिक्खों को दबाने और खत्म करने की नीति शुरू हो गई थी, जिसका मुख्य सूत्रधार पंडित जवाहर लाल नेहरू था। इसी का ही निष्कर्ष था कि सन् १९८४ में भारत की कांग्रेस सरकार ने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब, श्री अकाल तख़्त साहिब सहित कई सिक्ख गुरुधामों पर फ़ौजी हमले कर सिक्ख कौम को ख़त्म करने का यत्न किया। सिक्ख योद्धाओं ने इतिहास से सीख लेते हुए दुश्मन फ़ौज का डट कर मुकाबला किया और शहादत प्राप्त की। जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने कहा कि सिक्खों को राज करने का संकल्प गुरु साहिबान के समय से ही मिला है, जिसे सिक्ख आज भी रोज़ाना की अरदास में 'राज करेगा खालसा' के रूप में याद करते हैं। उन्होंने कहा कि आज कौम को धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से मज़बूत होने की ज़रूरत है और इस दिशा में सिक्ख नौजवानों को उच्च दर्जे की शिक्षा प्राप्त कर देश-दुनिया में आगे बढ़ना होगा। इसके साथ ही सिक्ख कौम को विरासत में मिली सिक्ख शस्त्र-कला में भी निपुण होना बेहद लाज़िमी है। इसके लिए सिक्ख कौम सिक्ख मार्शल आर्ट— 'गतका' एवं अन्य विरासती शस्त्रों के प्रशिक्षण का प्रबंध करे और आवश्यकतानुसार आधुनिक हथियारों के प्रशिक्षण के लिए भी शूटिंग-रेंजें स्थापित करे।

जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने कहा कि आज अनेक चुनौतियां सिक्ख कौम को कमज़ोर कर रही हैं। नशों और अन्य मत के प्रचार ने सिक्खी को हानि पहुंचाई है। सीमावर्ती क्षेत्रों में लालच देकर किया जा रहा ईसाईमत का प्रचार चिंताजनक है, जिसके प्रति सिक्ख संस्थाए और जत्थेबंदियाँ पुरातन सिंघों की तरह धर्म प्रचार के लिए आगे आएं। खासकर सिक्ख नौजवानों में धार्मिक जज़्बा कूट-कूट कर भरा जाये, ताकि कौम सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक रूप से मज़बूत हो सके। इस दौरान जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने घल्लूघारा सप्ताह के दौरान श्री अमृतसर शहर में सरकार द्वारा फोर्स की भारी तैनाती पर भी सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि सरकार को समझना चाहिए कि सिक्ख कौम किसी को डराने वाली कौम नहीं है, बल्कि यह तो मज़लूमों की रक्षा करती आई है। ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने कहा कि श्री अकाल तख़्त साहिब सहित अन्य गुरुधामों पर हमला आज भी कौम को पीड़ा देता है। यह ऐतिहासिक सत्य है कि जिसने भी गुरुधामों पर हमला किया है, उसकी बर्बादी ही हुई है। उन्होंने घल्लूघारा दिवस के शहीदी समागम के दौरान पहुँचने वाली प्रमुख पंथक शख़्सियतों व संगत का धन्यवाद भी किया।

शहीदी समागम के दौरान तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने भी संगत के समक्ष विचार व्यक्त किये और जून, १९८४ ई. के घल्लूघारे को समकालीन कांग्रेस सरकार की मानवता विरोधी कार्यवाही कहा। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम इस त्रासदी को कभी नहीं भूल सकती, बल्कि प्रत्येक वर्ष इसके ज़ख़्म फिर से ताज़ा होते हैं।

इस अवसर पर संत बाबा जरनैल सिंघ ख़ालसा भिंडरांवाला के सुपुत्र भाई ईशर सिंघ, शहीद भाई अमरीक सिंघ की धर्म-पत्नी बीबी

हरमीत कौर, सुपुत्री बीबी सतवंत कौर, भ्राता भाई मनजीत सिंघ भूराकोहना, शहीद जनरल सुबेग सिंघ के भाई स. बेअंत सिंघ, शहीद भाई नछत्तर सिंघ पहिलवान के सुपुत्र भाई भुपिंदर सिंघ पहिलवान सहित अन्य शहीदों के पारिवारिक सदस्यों को सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ, जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ, एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी और जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने गुरु-बख़शीश सिरोपायो देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर पहुँची सिक्ख संघर्ष से सम्बन्धित अन्य शख़्सियतों को भी सिरोपायो देकर निवाजा गया।

समागम के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव जत्थेदार करनैल सिंघ पंजोली, कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य स. हरजाप सिंघ सुलतानविंड, सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, भाई अमरजीत सिंघ (चावला), भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल), भाई राम सिंघ, स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्ड, स. भगवंत सिंघ सिआलका, स. गुरबचन सिंघ करमूंवाला, स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, भाई अजाइब सिंघ अभ्यासी, स. सुखवरश सिंघ (पन्नू), स. अवतार सिंघ वणवाला, शहीद भाई सतवंत सिंघ के भ्राता भाई वरिआम सिंघ, पूर्व सदस्य स. बलदेव सिंघ एम.ए., स. अमरबीर सिंघ ढोट, सचिव स. परमजीत सिंघ सरोआ, स. प्रताप सिंघ, स. सुखमिंदर सिंघ, उप सचिव (मीडिया) स. कुलविंदर सिंघ रमदास, मैनेजर स. सुलक्खण सिंघ भंगाली, उप सचिव स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. हरजीत सिंघ लालूघुंमण, स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, स. गुरमीत सिंघ बुट्टर, स. तेजिंदर सिंघ पड्डा, स. हरजिंदर सिंघ कैरोंवाल, स. सिमरजीत सिंघ (कंग), स. निरवैल सिंघ, आनरेरी सचिव स. गुरमीत सिंघ, स. सुखदेव सिंघ भूराकोहना, स. रघबीर सिंघ राजासांसी, स. सिमरनजीत सिंघ (मान) सहित बड़ी संख्या में संगत उपस्थित थी।

जून १९८४ का घल्लूघारा विश्व धर्म इतिहास में क्रूर कर्म के तौर पर रहेगा याद : एडवोकेट धामी

जून १९८४ ई. में भारत की कांग्रेस सरकार द्वारा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख़्त साहिब पर किये गए फ़ौजी हमले के दौरान शहीद हुए सिंघ, सिंघनियों एवं बच्चों को याद करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि इस घल्लूघारे के दौरान सिक्ख कौम के योद्धाओं ने पुरातन सिक्ख रिवायतों की पहेरेदारी की और शहादत की परंपरा को जारी रखा। घल्लूघारे से सम्बन्धित शहीदी समागम के पश्चात् बातचीत करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि सिक्ख कौम कभी भी अपने गुरुधामों की बेअदबी बरदाश्त नहीं कर सकती और चढ़ कर आए दुश्मन को सिक्ख कौम ने हमेशा ही मुँहतोड़ जवाब दिया। उन्होंने कहा कि जून १९८४ का घल्लूघारा किसी बाहरी दुश्मन ने नहीं, बल्कि अपने ही देश की ज़ालिम सरकार का वहिशीयाना कर्म था। यह सिक्खों को बेगानेपन का एहसास करवाने वाली कार्यवाही थी, जिसे पूरे विश्व के धर्म इतिहास में क्रूर कर्म के तौर पर याद रखा जायेगा।

भाई मनी सिंघ जी को बंद-बंद काट कर शहीद किये जाने का दृश्य

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2020-22 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2020-22

GURMAT GYAN July 2022

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा शीश महिल साहिब,
श्री कीरतपुर साहिब (ज़िला रूपनगर)

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh

Date: 7-7-2022